तेज पाक्षिक, मनोरंजन टैक्स १.५० रुपये
अंक : ७ वर्ष : १८ १ अप्रैल १९८२

दीवाना

लल्लू

चलो लल्लू आज कहीं चलते हैं। तुम रोज इस पार्क में लाकर इसी बैंच पर बिठाते हो। बोर हो गयी हूं। चलो आज मिनर्वा में चलते हैं। वहां नयी पिक्चर लगी है

नयी थोड़े ही है वह। छः दिन हो गये उसे लगे, मैं तो घर वालों के साथ उसे देख भी आया हूं।

हां चलो लाइब्रेरी में चल कर बैठते हैं। वहां नयी किताबें और मैगजीनें पढ़ेंगे।

दिन भर किताबों में सिर खपा कर भी तुम फिर किताबें पढ़ना चाहते हो ?

तो फिर क्या करें ? शहर से दूर नदी किनारे बैठ कर लहरें गिनें ?

मुझे मगरमच्छ से डर लगता है। फिर चलो रैस्टोरेंट में चल कर बैठते हैं।

रैस्टोरेंट !

रैस्टोरेंट वाले लुटेरे होते हैं। ग्राहकों को लूटते हैं और होटल का खाना खाने से पेट भी खराब होता है।

तो डिस्को ही में चलो। बड़ा मज़ा आयेगा।

मेरे कान में दर्द है। वहां का हाईवाल्यूम म्यूजिक कानों को चुभेगा। मेरी बात मानो आजकल पुराने किले के पास फ्लावर शो लगा है। रंग बिरंगे फूलों का मेला देख दिल खुश हो जायेगा।

हूंह फ्लावर शो तो सिर्फ पक्की उम्र के लोग ही जाते हैं। वहां हमारा क्या काम है। यह शौक बुड्ढे-खुड्ढे रिटायर्ड आदमियों का है।

इससे अच्छा तो यह होगा कि डॉग शो देखने चलें।

एक बार मुझे कुत्ते ने काट खाया था तब से मैं कुत्तों के नज़दीक भी नहीं जाता।

अहा! आओ स्कैटिंग रिंक चलें, स्कैटिंग रिंक ?

हम दोनों को ही स्केटिंग नहीं आती। टांग वांग टूट गई, तो लेने के देने पड़ेंगे। भारतनाट्यम या शास्त्रीय गायन सुनने जाने में कोई खतरा नहीं है.

बोर होकर मरने का खतरा तो है।

छोड़ो यह सब बेकार की बातें। घर चल कर बैठते हैं और टी वी देखते हैं।

आज टी वी प्रोग्राम बोर नहीं करेगा।

टी वी ? दिल्ली दूरदर्शन के कार्यक्रम देखने में भी भला कोई तुक है ? कृषि दर्शन और कुम्भ मेले की टी वी रिपोर्ट देखने से अच्छा तो यही है हम यहीं बैठे रहें। जरूरी है बोर होना।

बोर नहीं करेगा ?

मुझे अब याद आया आज मेरे सारे घर वाले एक रिश्तेदार की शादी में गये हैं। बारह बजे से पहले कोई घर नहीं लौटेगा। बस हमीं दो होंगे। अब तो चलोगे मेरे घर टी वी देखने।

घर में कोई नहीं होगा तो और भी बुरी बात है। वह होते तो गपशप ही मार लेते।

लो यह भी अच्छी रही। चली गई नाराज़ होकर और कह गयी मैं लल्लू का लल्लू ही रहा। अब यह कोई बात हुयी ? यह भी अच्छा ही हुआ कि टायम पर पता लग गया इसका टेस्ट कितना घटिया है। टी. वी. प्रोग्राम देखती है।

हैरानी इस बात से होती है कि टी वी कार्यक्रमों का स्तर इतना नीचा होते हुये भी कुछ लोग कैसे टी वी को लत बनाते हैं। उस पर तुर्रा यह कि जो मेरे जैसा टी. वी. देखने से इंकार कर दे उसे लल्लू कहा जा, रहा है। चलो जाने दो। मैं किसी के कहने से अपना स्टैंडर्ड नहीं गिराऊंगा।

स्टुपिड

खबर अच्छी नहीं है भैरो सिंह! राजा का तख्ता उलटने वाला है.

बलवा हो गया ?

गड़बड़ सिंह नाम का बागी खड़ा हो गया है वह लोगों को राजा के खिलाफ भड़का रहा है। लोग भी उसके बहकावे में आ रहे हैं। कई शाही सिपाही मार दिये उसने! उसका हौसला इतना बढ़ गया है कि उसने सरे आम ऐलान कर दिया है ...

गड़बड़ सिंह ने ऐलान किया है कल रात को वह आपकी मूंछें उखाड़ कर ले जायेगा।

उसकी ऐसी गुस्ताखी ?

गर्रर्रर्र!

सेनापति खड़गसिंह!

आप चिन्ता न कीजिये महाराज! सेनापति ख सिंह के रहते आपकी मूंछों को जो लगायेगा वह हाथ कट कर गिरेगा।

आओ मेरे बहादुर सिपाहियों। एक बागी की इतनी हिम्मत कि हमारे प्रिय राजा की मूछें उखाड़ कर ले जाने की धमकी दे। अपनी तलवार के जौहर दिखाने का मौका आ गया है। मंजिल हमारे सामने हैं। चारों तरफ से एक साथ धावा बोलना, हर हर महादेव!

शाबाँश खडग सिंह! यह क्या है? तुम उस बागी का सिर काट कर ले आये हो? मैं तुम्हें पच्चीस गज का प्लाट जागीर के रूप में इनाम देता हूं।

महाराज यह बागी का सिर नहीं है। पास के शहर में क्रिकेट टैस्ट मैच हो रहा था। हमने मैदान पर धावा बोला और बैट्स मैन का हैलमेट छीन कर ले आये। आप इसे पहन कर

सोइये कोई आपकी मूछों को हाथ नहीं सकेगा। बागी के अड्डे तक जाने के सिपाहियों को यात्रा भत्ता और ओवरटाइम के लिये शाही कोष में धन नहीं है।
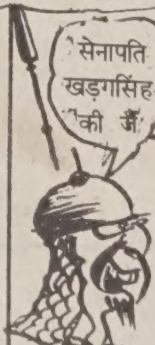
सेनापति खड़गसिंह की जै

आपका भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र रंवक्ष भूषण पं० हंसराज शर्मा

मेष : आय उत्तम, व्यय यथार्थ, यात्रा लाभप्रद, परिश्रम सफल रहेगा, काम बनते जाएंगे, व्यर्थ की उलझनें बनेंगी, मन भी परेशान रहेगा, यात्रा अचानक, व्यय अधिक, घरेलू चिन्ता बनेगी, लाभ अच्छा।

वृष : यात्रा में कष्ट या हानि; कोई जटिल समस्या पैदा होगी, व्यय बढ़ेगा, मित्र सहयोग देंगे, मिलेजुले फल मिलेंगे, आय में वृद्धि पर मिलेगी देर से, व्यय अधिक, अच्छे लोगों से सहयोग पाएंगे।
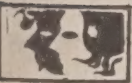
मिथुन : कारोबार यथापूर्व ही, दौड़धूप अधिक, लाभ देर से मिलेगा, समस्याएं दूर होती महसूस होंगी, रुका पैसा मिलेगा, यात्रा न करें, अन्य हालात ठीक ही चलेंगे, लाभ होता रहेगा, परिश्रम सफल।

कर्क : यात्रा सावधानी से की जाए, सेहत को संभाले रखें, परिवार से सुख, कारोबार ठीक चलेगा, व्यय यथार्थ, आय में वृद्धि, कारोबार में उन्नति, संघर्ष भी काफी आएंगें, परेशानी बढ़ेगी, चिन्ता व्यर्थ में ही रहेगी।

सिंह : अच्छी बुरी घटनायें होती रहेंगी, अपनों से बिगाड़ या परेशानी, दौड़धूप अधिक, यात्रा सफल, समय पर सहायता न मिलने से कोई जरूरी काम न बन सकेगा, विरोधी मुंह की खाएंगें।

कन्या : व्यय अधिक, बिमारी या घरेलू हालात से चिन्ता, कोई नई उलझन पैदा होगी, व्यापार से लाभ. यथार्थ, व्यय कुछ कम, सेहत को संभाल के रखें, स्त्री सहयोग मिलेगा, काम भी बनते जाएंगें

तुला : सरकारी कामों में सफलता, आय में वृद्धि, मित्रों से सहयोग, नए काम से लाभ होगा, व्यय की अधिकता रहेगी, कामों में परेशानी या दिल न लगेगा, यात्रा पर न जाएं, कामकाज में उन्नति।

वृश्चिक : व्यापार में सुधार, अधूरे काम बनेंगे, योजनाएं सफल रहेंगी, स्त्री के माध्यम से काम बनेंगे, व्यय यथार्थ, अफसरों से संपर्क बनेगा, यात्रा सफल रहेगी, लाभ अच्छा होगा, व्यर्थ के कामों पर व्यय।
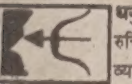
धनु : हालात अच्छे होंगे, शुभ कामों में रुचि परन्तु व्यर्थ की चिन्ता से घबराहट, व्यय यथार्थ, अधूरे काम परिश्रम द्वारा पूरे होंगे और लाभ भी मिलेगा, अच्छे लोगों की संगति रहेगी, व्यापार में उन्नति, लाभ बढ़ेगा।

मकर : समय नेष्ट है, परेशानी काफी रहेगी, यात्रा में कष्ट, उदासी या निराशा का सामना होगा, वातावरण सुधरेगा, भाग्य साथ देने लगेगा, काम रुक-रुक कर बनेंगे आय यथार्थ, राजकीय काम बन जाएंगे।

कुम्भ : शुभफलों की प्राप्ति, कारोबार सुधरेगा, लाभ भी अच्छा होगा, सेहत खराब या सुस्ती का प्रभाव रहेगा, यात्रा में कष्ट, आर्थिक लोभ देर से मिलेगा, दोस्त साथ देंगे, हालात में सुधार होगा।

मीन : मिलेजुले फल मिलेंगे, कोई आवश्यक काम बन जाएगा, यात्रा सफल, अफसरों से मेल-जोल, अधिक मनोरंजन आदि पर व्यय, नातेदारों से मेल-जौल, शत्रु पर विजय।

आपके पत्र

दीवाना वर्ष ८२ का अंक पांच पढ़ने को मिला। चिल्ली द्वारा रंगे जानी वाली लड़की का चित्र (मुख पृष्ठ पर) बहुत ही सुन्दर लगा। इसी अंक में लल्लू, मोटू-पतलू, सिलबिल-पिलपिल ने बहुत हंसाया। कहानी ''चीखती धड़ी का रहस्य'' अब भाग-२ तक और भी मनोरंजक लगने लगी है अगले अंक की प्रतिक्षा में!

—ओम प्रकाश भाटिया (टीटू),
पहाड़ी धीरज

दीवाना का अंक चार प्राप्त हुआ। एक बार पूरी दीवाना पढ़ने के बाद भी विशेषकर मोटू-पतलू के कारनामों ने तथा 'असली कौन नकली कौन' पोस्ट मैन के लेख को तो बार-बार पढ़ने पर मजबूर कर दिया। और अन्य प्रकाशित सामग्री ने भी मेरा इतना मनोरंजन किया कि दीवाना की जितनी तारीफ की जाए मैं समझता हूं उतनी ही कम है।

—करतार सिंह पातलान, जीन्द (हरि०)

दीवाना का अंक ४ मिला। रंगीन एवं आकर्षक मुखपृष्ठ से आच्छादित होने के कारण मन प्रसन्न हो गया। यह अंक अत्याधिक रोचक व ज्ञान वर्धक रहा। हास्य कथा 'असली कौन नकली कौन' विशेष उल्लेखनीय रही। लेखक प्रेमनाथ का नया धारावाहिक उपन्यास अत्यंत ही रोचक सिद्ध हुआ। क्यों और कैसे स्तंभ में औद्योगिक हीरे के बारे में व्यवस्थित जानकारी पाठकों को दी गई थी। राष्ट्र की प्रमुख विषयों एवं वस्तुओं पर सुलझी हुई जानकारी देने की परंपरा, प्रशंसनीय है।

मुझे खुशी होगी कि अगर आप पत्रिका में मुफ्त पोस्टर, फिल्म फीचर एवं फिल्म पैरोडी फिर से प्रारम्भ करें।

शुभकामनाओं के साथ एवं अगले अंक के इंतजार में!

—बीरबल प्रकार मेहर, 'चमन'
मिट्ठुमुड़ा, रायगढ़ (म.प्र.)

अंक ४ के मुखपृष्ठ को देखकर हंस-हंस कर पेट में दर्द हो गया, इतने अच्छे-अच्छे टाईटल पृष्ठों का दीवाना मैं खुद ही दीवाना हो गया हूं। लल्लू स्तंभ को बढ़ा कर दिया करें तो सोने पर सुहागा हो जाएगा। मौटू पतलू की कथा में कोई मजा नहीं आ रहा है जबकि इसकी कमी सिलबिल और पिलपिल पूरी कर देते हैं।

आपसे अनुरोध है कि चना-कुरमुरा में जो चुटकले प्रकाशित किए जाते हैं वो पाठकों के नाम सहित हों।

—सुरेश खुराना 'पप्पी',
खुराना भवन, जींद-१२६१०२

दीवाना का नया अंक ५ मिला। काफी रोचक रहा। इस बार लल्लू, राजा जी, पिलपिल-सिलबिल व मोटू-पतलू काफी रोचक रहे। कृपया मोटू-पतलू की पृष्ठ संख्या बढ़ायें। स्तंभ रंगोली, भंग फू फाइटिंग, रंग-बदरंग आदि स्तंभ ने तो दीवाना में चार चांद लगा दिये। चीखती घड़ी का रहस्य, होली का भूत भी अच्छे लगे।

—जसपाल भारद्वाज, बरेली-२४३००१

दीवाना का अंक ४ प्राप्त हुआ किन्तु बहुत देरी से। फिर भी अन्दर की सामग्री देख कर देरी से प्राप्त होने का गम खत्म हो गया। मुखपृष्ठ बहुत पसन्द आया। ''परोपकारी, ''लल्लू'', ''राजा जी'' आदि स्तंभ सारे घर भर में पसन्द किये गए। कृपया दीवाना को सही समय से पहुंचाने की कृपा करें।

—नितिन जलतारे, दुर्ग- म.प्र.

मुख्य पृष्ठ पर

आओ तुम्हें हम बतलाते हैं
बात अजीब एक रात की
जादूगर ने क्या कर डाला
ली मुसीबत बिना बात की।
पहली आइटम में मात खा गया
समझ न आया देखकर उसको
चिल्ली को कोई क्या काटेगा
वो खुद कट जाये जो काटे इसको

अंक : ७ वर्ष : १८ १ अप्रैल १९८२

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा : २७ रुपये
अर्द्ध वार्षिक : १४ रुपये
एक प्रति : १.५० रुपये

नरक कुंड

—शिशिर विक्रांत

ईश्वर की महान् कृपा से न तो हमारे अंदर साहस की कमी है, और जहां तक हमारी समझ से, हम किसी से बहादुरी में भी कम नहीं हैं। कैसा भी कठिन काम हमारे जिम्मे सौंपा जाए, हम उसको बड़ी सरलता और प्रसन्नता से पूरा कर देते हैं। यह आदत अभी की ही नहीं, हमारे अंदर बचपन से ही है। पर एक काम से हम बचपन से ही बुरी तरह बिदकते हैं और वो काम है, सब्जी-मंडी से सब्जी लाने का। इससे अधिक कठिन कार्य हमारे लिए कोई भी नहीं है।

सब्जियां लाने का आदेश सुनते ही हमें एलर्जी होती है। मानो किसी ने सब्जी लाने को न कहकर, विष का प्याला पीने का हमें आदेश दे दिया हो। हमारे इस डर के छोटे-मोटे इतने कारण हैं, जिनकी गिनती हम खुद ही कभी नहीं कर सके।

जब भी हमारे ऊपर सब्जी लाने की जिम्मेदारी सौंपी जाती हमारी हालत पतली हो जाती। अपने से छोटे या बड़े भाई को तरह-तरह के प्रलोभन दे कर हमें इस बला से मुक्ति मिलती। हमारी इस कमजोरी का लाभ भाई-बहन अक्सर ही उठाते। स्पष्ट रूप से हम इस काम को नकार नहीं सकते थे क्योंकि यह आदेश पिताजी का होता था। हमारे अंदर पिताजी का सामना करने का भी साहस नहीं था तो उनकी आज्ञा के उल्लंघन का विचार तो हम स्वप्न में भीनहीं कर सकते थे।

अचानक ही हमको इस बला से छुट्टी मिल गई। यह बात दूसरी है कि इसका मूल्य पिताजी की बहुत सारी उल्टी-सीधी सुनकर हमें चुकाना पड़ा। हमारे साहस और बहादुरी पर व्यंग्य किए गए। परंतु खून के घूंट की तरह हम चुपचाप सब कुछ सहन कर गए।

वो लगभग पांच वर्ष पहले की घटना है। पिताजी ने आज्ञा दी कि हम फलां-फलां सब्जियां ले आएं। दुर्भाग्यवश भाई-बहनों में उस समय हम अकेले ही घर पर थे। इस काम से बचने के लिए हमने अड़ौस-पड़ौस के तीन चार लड़कों को पटाने की कोशिश की, पर हमारी कोशिश नाकामयाब रही। कोई भी इस काम के लिए राजी ही नहीं हुआ।

जब तक हम कोई और तरकीब निकालते, पिताजी ने घर के बाहर आकर गली में साइकिल लेकर परेशान दशा में खड़े हुए हमको देख लिया। वहीं से वे जोर से चिल्लाए,'' इतनी देर से खड़े-खड़े क्या कर रहे हो ? जल्दी जाकर सब्जी लाओ। कामचोर कहीं के। काम में तो मन लगता ही नहीं है बस आराम . . .''

पिताजी और भी न जाने क्या-क्या कहते रहे, पर हम इसके आगे के शब्द न सुन सके। उनकी आवाज कानों में पड़ते ही, बिना पीछे देखे, साइकिल पर सवार हो हम ताबड़तोड़ पैडल मारने लगे। उनकी नजरों से जल्दी से-जल्दी ओझल हो जाने के चक्कर में हमने एक कुत्ते की टांग पर साइकिल चढ़ा दी। गुस्से से भरा कुत्ता गुर्राकर हमें काटने को दौड़ा तो हड़बड़ी में हम सामने खड़े एक गदहे से जा टकराए।

इस भयानक दुर्घटना में शुक्र था कि हमें कहीं अधिक चोट नहीं लगी। हां, एक हाथ थोड़ा सा छिल जाने के कारण, हमने उसके ऊपर अपना रुमाल बांध लिया। आस-पास के लोग इस एक्सीडेंट पर ठहाके लगा रहे थे। कुत्ते, गदहे और उन लोगों को कोसते हुए हम साइकिल पर बैठ कर आगे बढ़े।

सब्जीमंडी में पहुंचकर काफी देर तक तो हम सब्जियों के नाम और दाम ही पूछते रहे। कई साल बाद वहां गए थे, इसलिए बहुत सी सब्जियों का तो हमें नाम ही नहीं मालूम था, और दाम तो किसी का भी अनुमान में नहीं था।

जो सब्जी पहले चार आने किलो मिलती थी, उसी को चार रुपए प्रति किलोग्राम सुनकर हमारा माथा ठनका। लगा कि दुकानदार निश्चय ही हमारे अजनबीपन को भांपकर हमें ठगने की कोशिश कर रहे हैं। हमने अपनी बुद्धिमानी का परिचय देते हुए किसी से भी कोई सब्जी नहीं ली। पर खाली हाथ कैसे लौटते ? सोच-विचार में हम मग्न ही थे कि हमारी नजर एक सब्जीवाले की बड़ी-बड़ी लौकियों पर पड़ी।

बड़े कम दाम में ही हमने एक काफी वजनी और बड़ी लौकी खरीद ली। सोचा 'यह सचमुच बुद्धिमानी का काम हुआ। सब्जी तो खाएंगे ही, विटामिन भी इससे प्राप्त होगा।' छोटे से थैले में, उस लौकी का कलेवर समा नहीं रहा था, इसलिए साइकिल के पीछे कैरियर में हमने उसे दबा लिया। प्रसन्नता से हम घर की ओर बढ़ चले।

घर पहुंचकर हम बाहर से ही सगर्व चिल्लाए, ''मां-मां, देखो, कितनी बढ़िया लौकी लाया हूं। देखते ही खुश हो जाओगी'' मां ने बाहर हमें देखते हुए पूछा, ''सिर्फ लौकी ही लाए हो क्या ? आलू वगैरा कुछ नहीं लाए ? खैर . . .लौकी है कहां ?''

लौकी निकाल कर देने को हम जैसे ही कैरियर की ओर मुड़े, हमारी सांस ऊपर की
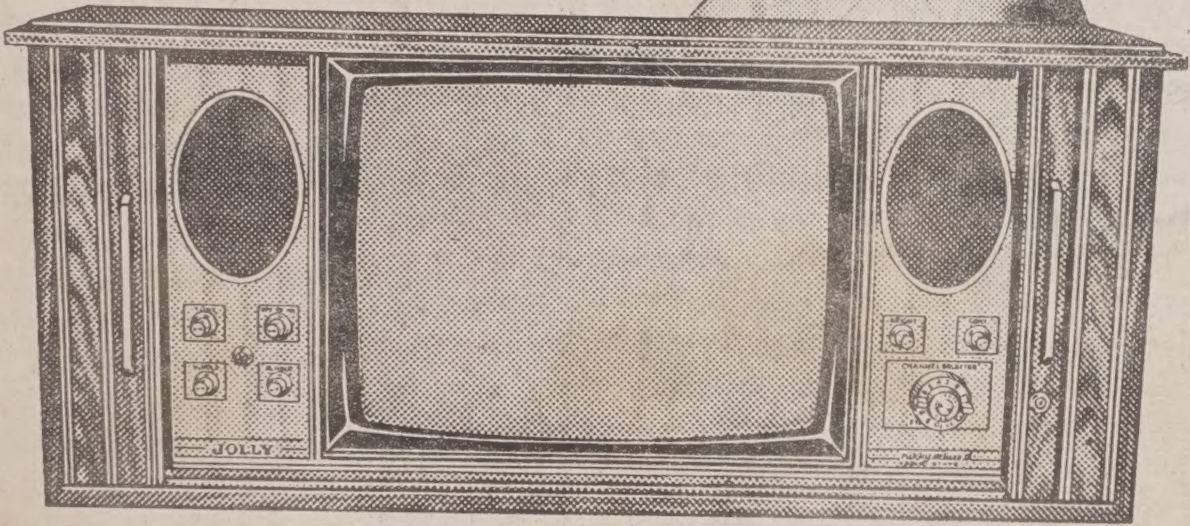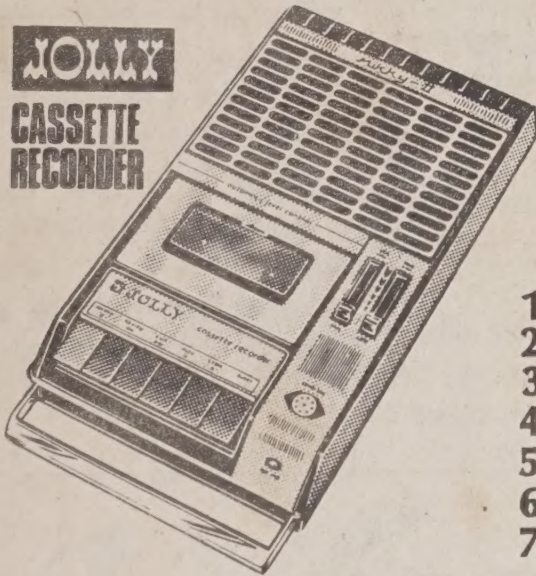
शेष पृष्ठ ८ पर दीवाना

पृष्ठ ६ से आगे

ऊपर, नीचे की नीचे रह गई। पूरी लौकी के बजाए, कैरियर में उस लौकी का मुश्किल से पांचवा हिस्सा ही दबा हुआ था। आते समय भीड़-भाड़ का नाजायज फायदा उठाकर या तो किसी शरारती ने यह शरारत की थी, अथवा गौ माता ने लौकी ले ली थी।

तब तक पिताजी भी आ गए और लगे जोर-जोर से फटकारने। मां ने उनसे, हमारी इस कमजोरी का विस्तारपूर्वक वर्णन किया तो माथे को ठोंकते हुए वे बोले, "अपना यह ललुआ तो एकदम ही ठलुआ निकल गया। अरे, सब्जी लाने में कैसा डर?" पिताजी ने हमारे लिए कहा तो बहुत-कुछ, लेकिन हमें खुशी हुई कि चलो, अब इस बला से छुटकारा तो मिला।

वर्षों बीत गए उस घटना को गुजरे, पर कमजोरी ज्यों की त्यों हमारे अंदर बरकरार है। कुछ समय पहले हमारी बुआ जी के घर शादी पड़ी। बुआ जी दूसरे शहर में रहती हैं। शादी में शामिल होने और सहयोग करने के लिए घर वालों के कहने पर हमें उनके यहां जाना पड़ा। हम वहां पहुंचकर प्रसन्नता से उनके कार्यों में सहयोग करने लगे।

ठीक शादी वाले दिन, जब उपस्थित लोगों के जिम्मे एक-एक काम सौंपा जा रहा था, हमारे ऊपर भी एक काम निबटाने की जिम्मेदारी सौंपी गई। और काम था वही, जिसे सुनकर हमारी रूह फना होती है, यानी कि सब्जी लाने का काम। फूफा जी ने जैसे ही कहा, "...और लल्लू बेटा, तुम सब्जी मंडी जाकर सारी सब्जियां लेते आओ। यह रही सब्जियों की फेहरिस्त," हमारे होश फाख्ता हो गए। इतने लोगों के बीच में यह कार्य नकारने का हमारा एकाएक साहस भी नहीं हुआ।

जब वहां से, फूफा जी के अलावा और सब लोग अपने-अपने कार्य पर चले गए तो काफी साहस करके भी बड़े संकोच से हम बोले, "फूफा जी, यह काम हमारे वश का नहीं है। कहिए तो आसमान के सितारे तोड़ कर हम ला दें, पर इसको करना हमारे लिए बड़ा मुश्किल है। हां, इसके बदले कोई और दूसरा काम हम कर देंगे।"

और भी बड़ी अनुनय-विनय फूफा जी से की, पर सब बेकार। वे इसे मात्र मजाक ही समझते रहे. हमारा अत्यधिक मजाकिया स्वभाव, गंभीरता को टिकने ही नहीं दे रहा था। आखिरकार, बड़े-बड़े दो थैले लेकर हमें मजबूरन जाना ही पड़ा।

उस शहर की सब्जी मंडी का चेहरा देखते ही, सर्दी के बावजूद हम पसीना-पसीना हो गए। मंडी की शुरुआत में ही, ऊपर की ओर कपड़े का एक बड़ा बोर्ड टंगा हुआ था और उस पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था—नरक-कुंड। हमने बोर्ड लटकाने वाले के दिमाग की दाद दी। और किसी के लिए भले ही न सही, पर हमारे लिए सब्जी मंडी सचमुच ही नरक के कुंड से कम भयावह नहीं है। किंतु जब मंडी के अंदर की तरफ नजर गई, तब उस नरक-कुंड का अर्थ समझ में आया। वस्तुतः वहां कीचड़ और गंदगी का घोर साम्राज्य था।

सब्जी मंडी के अंदर जाने और वहां से आने वाले लोगों को देखकर एक तरफ हमारी परेशानी अपना रंग गहरा रही थी और दूसरी ओर हंसी के मारे पेट फूला पिचका जा रहा था। सारी मंडी में हो रही भयावह कीचड़ और दलदल में, लोग एक हाथ से अपने चप्पल-जूतों को पकड़े थे और दूसरे हाथ से अपना पैंट-कमीज-पजामा धोती ऊपर खिसका कर इधर-उधर घूमते हुए सब्जियों की खरीददारी कर रहे थे।

काफी देर तक हम बाहर खड़े साहस ही बटोरते रहे। एक बार मन कहता 'लौट चलें' तो दूसरी बार विचार आता 'जब ओखली में सिर दे ही दिया तो मूसल से क्या डरना?' आखिरकार अपनी चप्पलें उठा कर और झक सफेद पतलून को ऊपर खिसकाते हुए, हम उस नरक-कुंड में घुस गए।

दो-तीन दुकानदारों से भाव-ताव किया। हमारे बड़े-बड़े थैलों और बात करने के ढंग को देखकर दुकानदारों की पैनी नजरों ने हमको 'मोटा और साथ ही गांठ का पूरा ग्राहक' भांप लिया। तीन-चार सब्जी वाले हमारे पास आकर, अपनी दुकान पर ले जाने के लिए दबाव डालने लगे।

उनमें से हरेक सब्जी वाला हमें अपना ग्राहक बनाना चाहता था। इसी को लेकर उन लोगों में पहले तो वाक्-युद्ध चलता रहा। फिर एक ने हमारा हाथ पकड़कर अपनी ओर खींचा था कि शेष सब्जीवाले भी हमको अपनी-अपनी तरफ खींचने लगे। हम विवश से खड़े थे, क्योंकि दोनों हाथ पहले ही घिरे हुए थे।

सब्जीवालों का यह हमारे ऊपर बढ़ता खिंचाव, हमें रुंआसा बना रहा था। हमने उनको डांटा-फटकारा, पर कोई असर न देख कर हमारा गुस्सा भड़क उठा। तंग आकर गुस्से में, हाथों से चप्पल और पतलून छोड़कर हमने जैसे ही दो दुकानदारों के ऊपर अपने दोनों हाथ मारने को उठाए, उन्होंने झट से घबराकर हमें छोड़ दिया। लेकिन उनके छोड़ने की वजह से, हमारा संतुलन एकाएक बिगड़ गया। संभलने की कोशिश की, पर नीचे हो रही दलदल ने हमारे पैरों को टिकने ही नहीं दिया और हम धड़ाम से उसी दलदल में आ गिरे।

बड़ी मुश्किल से हम उठ सके। सिर से पैर तक, दलदल की कीचड़ में हम रंग-पुत गए थे। हम अपने को साफ करने की कोशिश कर रहे थे और वहां के लोग खुले ठहाके लगा रहे थे, हमारी दशा देख कर। ●

मुसम्मात पिंड़ली

लटके

मोटू-पतलू

टाईम मशीन की वापसी

पिछले दिनों लाखों साल आगे से आये एक वैज्ञानिक की टाईम मशीन मोटू-पतलू के हाथ लग गई थी. वैज्ञानिक ने उन्हें टाईम मशीन के आविष्कार और उसकी कार्यप्रणाली का सिद्धांत समझाते हुये बताया था कि जिस प्रकार एक मोटर गाड़ी सड़क पर चल कर हमें आगे या पीछे ले जा सकती है, इसी प्रकार टाईम मशीन समय के धारे पर चल कर हमें आगे या पीछे ले जा सकती है.

वह वैज्ञानिक तो आगे के युग में पहुंच कर उड़ने वाले बन्दरों के चंगुल में फंसा रह गया है और अब मोटू-पतलू और उन के साथी टाईम मशीन पर सवार हो कर पहुंच गये हैं, आज से ३१०००० साल आगे के युग में. यानि आप जब यह दीवाना पढ़ रहे हैं तो कैलैंडर का साल है १९८२. और जहां मोटू-पतलू हैं वहां कैलैंडर का साल है ३११९८२.

उस युग में विज्ञान की प्रगति अपनी चर्म सीमा पर है अंतरिक्ष की दौड़ में समस्त ब्रह्माण्ड कहीं का कहीं पहुंच गया है जैसे हमारे जमाने में स्कूटर धायें-धायें करके सड़कों पर दौड़ रहे हैं, वैसे ही उस युग में अंतरिक्ष वाहनों की घमा-घमी है.

उस युग में मंगल ग्रह से आये तांबे जैसे लाल रंग के प्राणियों ने धरती पर आक्रमण कर के यहां अपना अधिकार जमा लिया है. मंगल ग्रह वालों के वैज्ञानिक धरती के वैज्ञानिकों से कहीं अधिक कुशल हैं. उन की विनाशकारी शक्ति अपार है.

उन की शक्ति का आधार एक्सनोबियम नाम का एक ऐसा विनाशकारी पदार्थ रहा है, जिस से वे धरती वालों की वैज्ञानिक प्रयोगशालायें, उन के अंतरिक्ष केन्द्र समाप्त कर चुके हैं. मोटू, डाक्टर झटका और जूडो मास्टर ने धरती के दो वैज्ञानिकों के साथ मिल कर मंगल ग्रह पर उन के सभी एक्सनोबियम भंडारों को समाप्त कर दिया है और अब बाकी बचे विनाशकारी पदार्थ से भरे एक अंतरिक्ष यान द्वारा धरती की ओर लौट रहे हैं. अब तक धरती पर मंगल ग्रह वालों का अधिकार है. इन के एक्स नोबियम का स्टाक समाप्त हो गया है. इस विनाशकारी शक्ति के बिना इन के लिये धरती वालों को गुलाम बनाये रखना कठिन हो रहा है. इस के बाद का आखों देखा हाल आगे प्रस्तुत है.

पता नहीं क्या हो गया है मंगल ग्रह पर हमारे अधिकारियों को हमारे वायरलैस का कोई जवाब नहीं मिल रहा है. और इधर एक्सनोबियम एमुनिशन के बिना धरती वालों को काबू में रखना मुश्किल हो रहा है.

हमारी गंज में एक्सनोबियम की एक भी बुलेट नहीं बची है. धरती वालों ने विद्रोह कर दिया तो हमारी बोटियां नोच डालेंगे.

पर तुम मेरी बोटियां क्यों नोच रहे हो? मैं ने तो सदा तुम्हारा साथ दिया है. हमेशा तुम्हारा ही दम भरा है.

तुम ने मंगल ग्रह पर जाने से इन्कार किया है. एक्सनोबियम आते ही पहले तुम्हें ठंडा करेंगे.

और कर लो अपना उल्लू सीधा!

अब पता लगा अपने ही साथियों को धोखा देना कितना महंगा पड़ा?

अब तो मोटू और उस के साथियों का अंतरिक्ष यान धरती के बहुत निकट पहुंच गया था.

मंगल ग्रह वालों का सफाया करते समय यह ध्यान रखना कि अपने धरती वालों को कोई हानि न पहुंचे.

हां, इस की पूरी सावधानी बरतेंगे.

उनका सबसे बड़ा केन्द्र, एन निशाने पर है....

तो फिर दे मारो राकेट.

यह तो हमारा अंतरिक्ष यान है.

एक्सनोबियम लाया है.

इस से पहले कि मंगल ग्रह वालों को हकीकत का पता चले, यान से आये एक राकेट ने उन के केन्द्र का काम तमाम कर दिया.
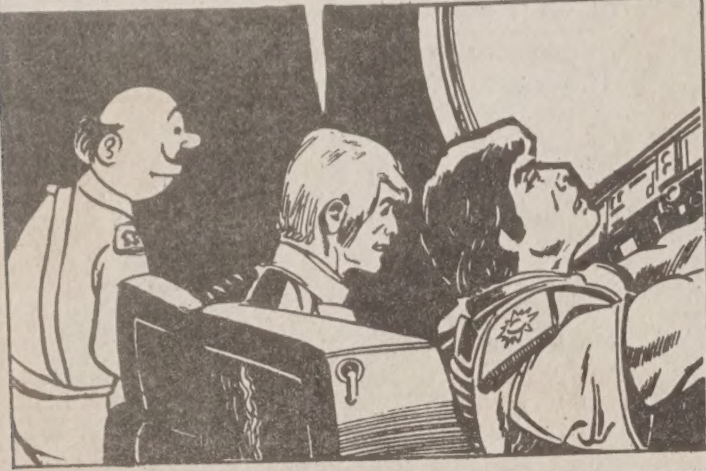
केन्द्र के समाप्त होते ही धरती के गुलामों में खुशी की लहर दौड़ गई.

इन्होंने जेलें तोड़ डालीं.

यान से आये अपने साथियों का स्वांगत किया.
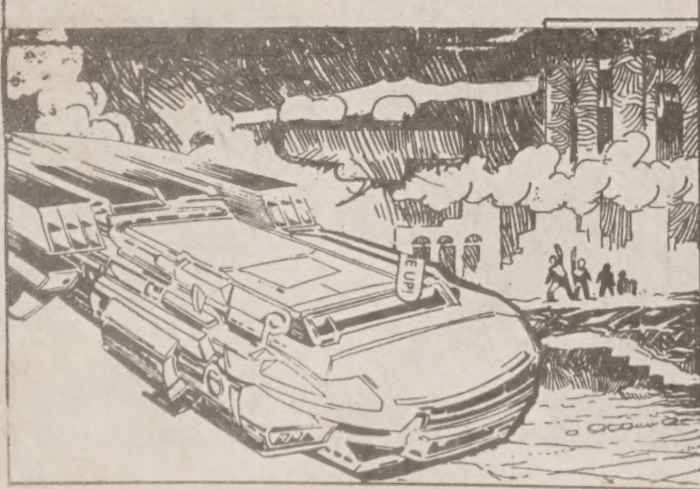
और बाकी बचे मंगल ग्रह वालों ने हथियार डाल कर आत्मसमर्पण कर दिया.

हमारा भी जवाब नहीं हम ने कमाल कर दिया

धोती फाड़ कर रुमाल कर दिया. हम न होते तो यह रुमाल भी तुम्हारा कफ़न बन गया होता.

और वे बंदी बना लिये गये.
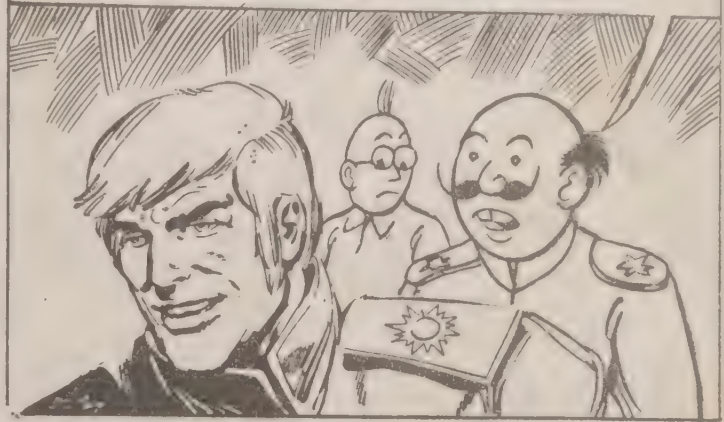
नाग का फन तन गया होता. क्या तुम कोई सांप पकड़ने गये थे ?

तेरे बहरे कानों के लिये भगवान का भजन करने गये थे.

हम तो समझे थे तुम मर गये.

मरे बराबर ही थे. बड़ी मुश्किल से बचे हैं

और यहां बच कर भी मरे बराबर है.

यह उल्लू घसीटा राम सब की जान का दुश्मन बना है.

वे तीन आदमी कहां गये जो हमारे साथ मंगल ग्रह पर गये थे.

वे बहुत बुद्धिमान हैं. हमें उन के दिमाग़ चीरफाड़ कर देखना चाहिये कि उन में क्या ख़ास बात है जो हमारे दिमागों में नहीं है.
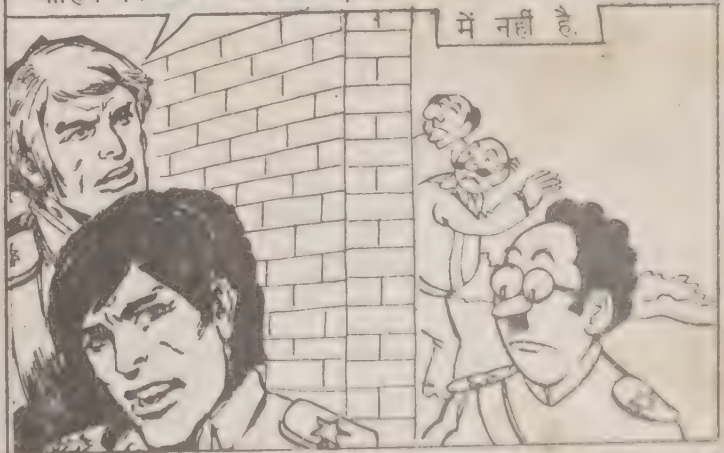
इसे पकड़ कर इसका दिमाग़ चीर फाड़ कर देख लो. यह भी उन्हीं का भाई बन्द लगता है.
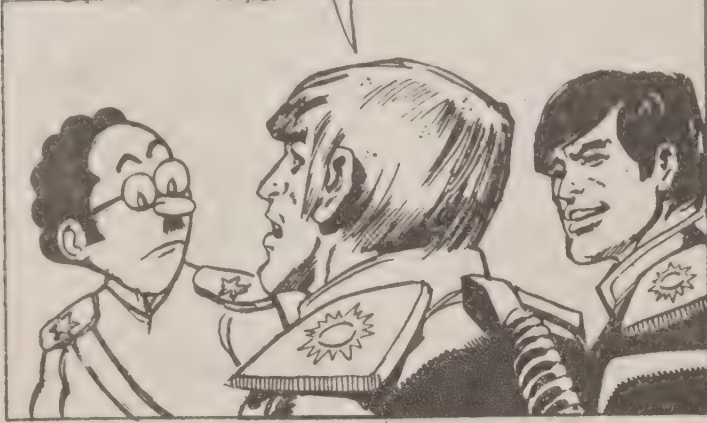
मेरा दिमाग़ चीरोगे।
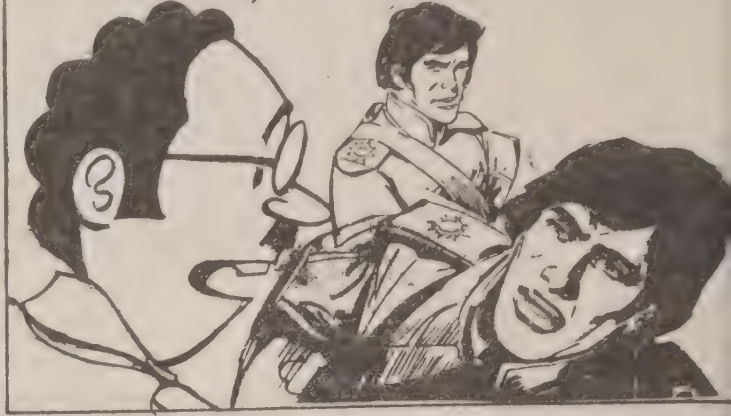
मंगल ग्रह वालों से बचा तो अब तुम मुझे जान से मारोगे.

अरे भागो यहां से.
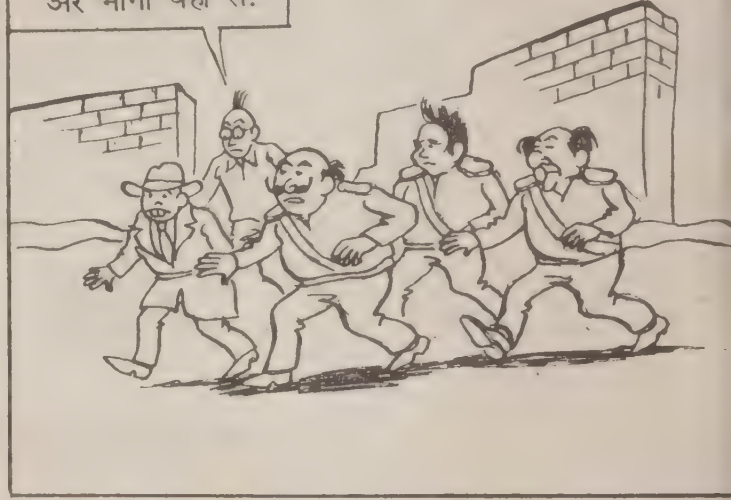
हम ने जिन की जान बचाई वही हमारी जान के दुश्मन बने हैं.

टाईम मशीन की तरफ़ भागो. याद करो वह कहां छोड़ी थी.

भागते-भागते अब वे बहुत दूर निकल आये थे.
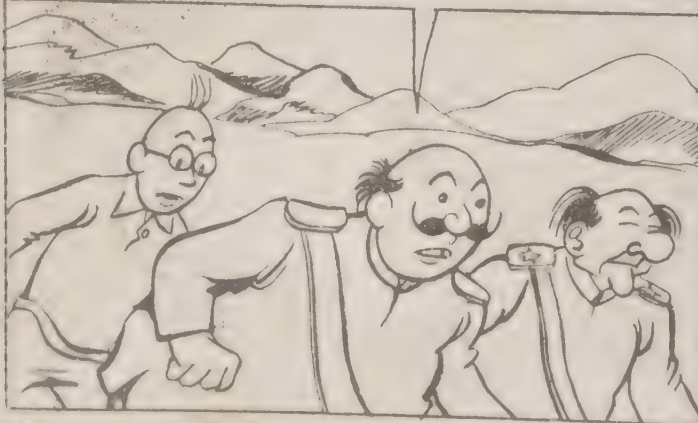
वह रही टाईम मशीन.

जल्दी पहुँचो इसके अन्दर
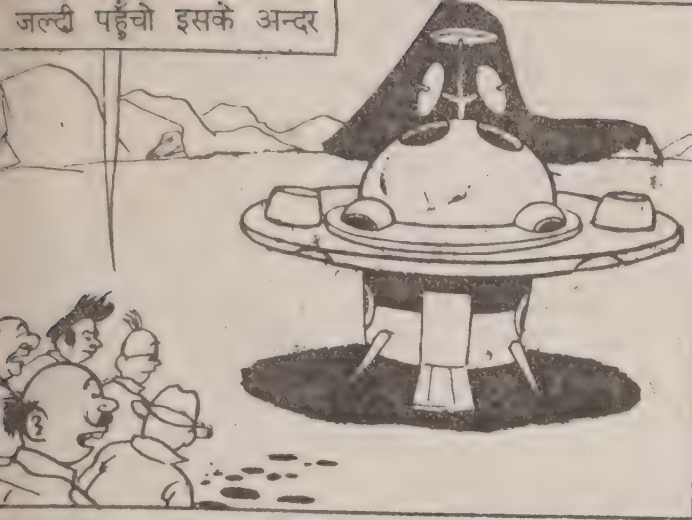
जल्दी स्टार्ट कर इसके इंजन
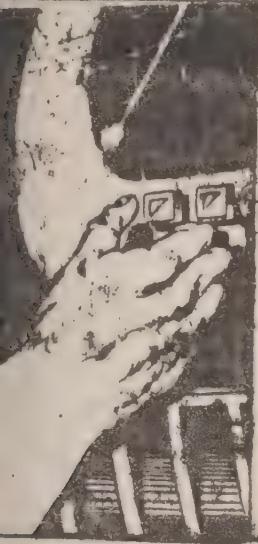
चेला राम ने जैसे ही टाईम मशीन का कंट्रोलसम्भाल उस के सुइच घुमाये.

इसके इंजन चालू हो गये और टाईम मशीन ने अपनी जगह से उठ कर समय के धारे में अपना सफ़र शुरु कर दिया.

स्ट करने के बाद मशीन आराम से स्टार्ट हो गई है. शुक्र है भगवान का.
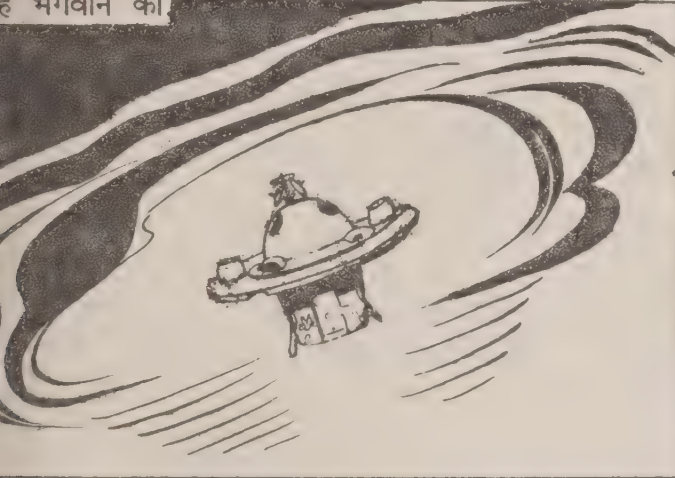
बाकी सब तो ठीक, पर दुख एक ही बात का है कि घसीटा राम मारा गया।

ज्यादा दुखी होने की जरूरत नहीं, मैं मारा नहीं गया हूं तुम से पहले भाग कर यहां आ गया हूँ।
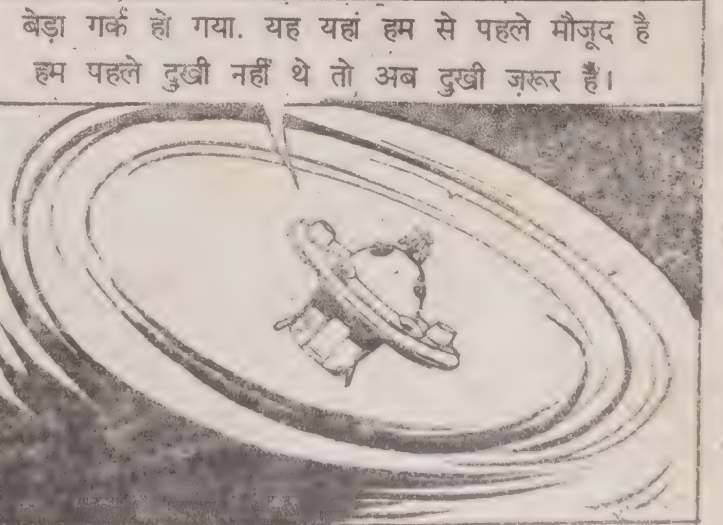
बेड़ा गर्क हो गया. यह यहां हम से पहले मौजूद है हम पहले दुखी नहीं थे तो अब दुखी ज़रूर हैं।

की टाईम मशीन. अब समय के धारे पर सफ़र करती जाने उन्हें कहां लिये जा रही थी. अब उन का यह सफ़र कहां ाप्त होगा? यह किसी को पता नहीं था. आगामी अंक में देखिये और पढ़िये, इन कलाकारों की धमाके दार कहानी.

लल्ला की लवस्टोरी

ल्ल की मुटल्ली मम्मी अब कितना चाहने लगी है मुझे! लगता मेरी होने वाली मदर-इन-ला अब अपनी डार्लिंग लड़की का हाथ फटा मेरे हाथ में दे देगी. कितने प्यार से उसने मुझे लिल्ली के साथ स के किनारे वाटर स्काईंग के लिये बुलाया है.

तेरी किस्मत का इंडियागेट खुल गया माई डीयर लल्ला दी ग्रेट. माई "वुड बी-मदर-इन ला" मेरी स्काईंग का हुक अपनी मोटर बोट से बांध रही है. अब बड़ा मजा आयेगा स्काईंग का.
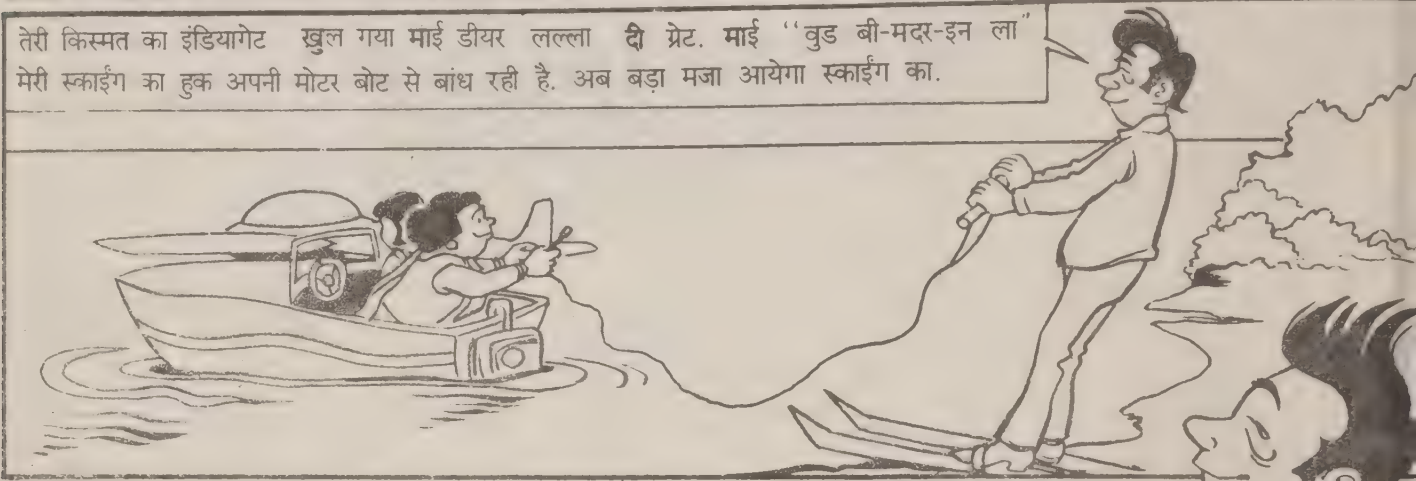
खुशी के मारे मेरा दिल आसमान में उड़ा जा रहा है.

खुशी के मारे ....आसमान में......अरे बचाअ

....मेरा कबाड़ा कर दिया वुड-बी-मदर-इन-ला ने

चीखती घड़ी का रहस्य

भाग - ४

ले० प्रेम नाथ
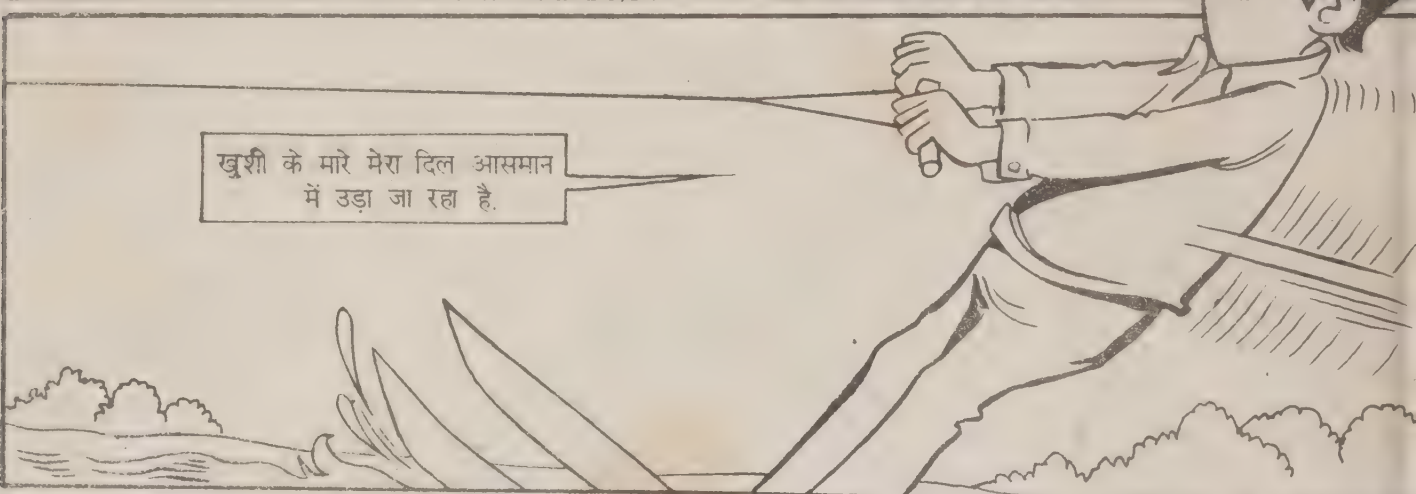
'हम एक चिल्लाने वाली घड़ी के विषय में खोज करने निकलते हैं और हमें मालूम होता है कि वह एक समय एक ऐसे. आदमी की थी जिसने एक कमरा भर के घड़ियों को शौकिया चिल्लाने वाली बनवा रखा है, घड़ी की खोज दूसरी ओर एक ऐसे रहस्य की ओर पहुंचा देती है जिसमें हरी के पिता बहुमूल्य पेन्टिंगों की चोरी के सिलसिले में जेल में सज़ा भुगत रहे हैं. यह अजीब ही तो है कि एक रहस्य दूसरे रहस्य से जुड़ता जा रहा है, यदि इनमें आपस में कुछ सम्बन्ध है तो?''

''सम्बन्ध कैसे हो सकता है?'' महिन्दर ने पूछा, 'मुझे अभी कुछ भी पता नहीं,'' राजू बोला, ''फिर भी हरी तुम्हें मि. हरीश के विषय में जो कुछ भी मालूम हो हमें बताओ. श्याम नोट करते जाना.''

हरी ने जो कुछ भी बताया वह कुछ अधिक न था. मि. हरीश एक छोटे से मोटे से खुशमिजाज व्यक्ति थे. लगता था जिनके पास अपने पुरखों से मिला काफ़ी धन था जो मित्र या व्यक्ति मि. हरीश से मिलने आते थे उन्हें देखने से हरी और उसके माता पिता का विचार था कि कभी मि. हरीश अभिनेता रहे होंगे. उनमें से अधिकतर थियेटर के लोग होते थे मि. हरीश अपने अतीत की कभी बात नहीं करते थे.

मि. हरीश ने हरी के पिता के मुकदमें में बयान दिया था जिसमें उन्हें निर्दोष बताया था. हरी के पिता को सज़ा हो जाने से वे काफ़ी परेशान प्रतीत होते थे. फिर हरी के पिता को सज़ा हो जाने के कुछ दिन बाद ही मि. हरीश ने स्वास्थ्य लाभ के लिये विदेश जाने की इच्छा प्रकट की थी और उन्होंने मि. महेशचन्द्र को उनकी गैरहाजिरी में घर की देखभाल करने का कहा था.

मि. हरीश दो सूटकेस ले कर विदेश चले गये थे और उसके बाद से इन्हें उनका कोई समाचार प्राप्त नहीं हुआ. उनके काफी मित्र उन्हें मिलने घर पर आते रहे, परन्तु कुछ समय बाद सब का आना बन्द हो गया. इसके बाद मि. हरीश द्वारा छोड़ा गया पैसा समाप्त हो गया और लगभग इसी समय मि. जीटर किराये के लिये कमरा ढूंढ़ते हुए आये. हरी की माता ने उन्हें ऊपर के कमरे घर का खर्च चलाने के लिये किराये पर दे दिये. मि. जीटर ने पहले ही कह दिया था उन्हें बिलकुल शांति चाहिये और वह इस मामले

में बेहद वहमी हैं. यह ही सब कुछ है जो मुझे मालूम है, जाहिर है इससे कुछ अधिक पता नहीं चलता. उसने उदास से स्वर में कहा 'तुम मेरे पिता की कुछ सहायता नहीं कर पाओगे, कोई भी नहीं कर सकता. मुझे अपने पहले व्यवहार पर खेद है. तुम्हारा फोन आने पर मैंने ही कमरे की बड़ी घड़ी को चिल्लवाया था ताकि मेरी मां तुम से बात न कर सकें, मैंने सोचा था तुम लोग कोई रिपार्टर वगैराह होगे. तुम समझते हो मैं बहुत दुखी हूं बहुत दुखी,

'हम समझते हैं'' राजू बोला ''और हम इस समस्या के विषय में सोचेंगे. कोई नया विचार आते ही तुम्हें बताएंगे.'' उन्होंने हरी से विदा ली और बरखासिंह ने गाड़ी स्टार्ट कर पूछा, किधर जाना है? घर चलें?'

राजू ने विचारों में खोये खोये सिर हिला दिया और हम राणादे से मिलने चले, यदि मि. हरीश अभिनेता थे तो हो सकता है राणादे को उनके विषय में कुछ पता हो, उन्होंने सैंकड़ों अभिनेताओं के साथ काम किया है. हमें राणादे के दफ्तर ले चलो बरखासिंह''।

'ठीक है श्रीमान्'' और बरखासिंह ने कार को मोड़ दिया, चंद ही मिनट में कार राणादे के दफ्तर के दरवाजे के सामने पहुंच गई. राणादे का दफ्तर ऊंची दिवारों के पीछे एक बहुत बड़ी इमारत में था. दरवाजे से दरबान ने फोन कर पता लगाया कि राणादे दफ्तर में हैं और लड़कों से मिल सकते हैं. कुछ क्षण बाद तीनों लड़के राणादे के सामने उनके दफ्तर में बैठे थे.

''अच्छा लड़कों।'' राणादे भारी आवाज में बोले, 'इधर कैसे आना हुआ? कोई और समस्या मिल गयी क्या?''

'हां जी,'' राजू बोला. ''अभी तो सब कुछ गड़बड़ सा लगता है और मैं ठीक से नहीं कह सकता इसमें कुछ निकलेगा भी या नहीं. देखिये हम एक चिल्लाने वाली घड़ी की खोज—''

''चिल्लाने वाली घड़ी!'' राणादे ने हैरत से टोका, 'उसे क्या हो गया, कुछ भी हो, यह नाम मैंने वर्षों से नहीं सुना.''

चिल्लाने वाली घड़ी की चोरी

''उसके विषय में '' राजू ने हैरानी से पूछा, ''आपका मतलब है किसी व्यक्ति का नाम'' चिल्लाने वाली घड़ी है?''

''वह उसका उपनाम था'', राणादे ने समझाया, ''उसका असली नाम चन्दू घंटा'' था और मजाक में लोग उसे चिल्लाने वाली घड़ी कहते थे. तुम्हें मालूम नहीं वह चिल्लाने वाला व्यक्ति था.''

जितना ही राणादे उसके विषय में बताते जाते थे उतना ही लड़के चकरा रहे थे.

''एक चिल्लाने वाला व्यक्ति'' राजू ने पूछा, ''मुझे इसका अर्थ ठीक से समझ नहीं आ रहा.''

''वह अपनी जीविका कमाने के लिये चिल्लाता था,'' राणादे ने हंसते हुए उत्तर दिया, ''टेलीविजन के आने से पहले समय, रेडियो पर रहस्यमयी कथाओं के प्रोग्राम हुआ करते थे जा बहुत ही लोकप्रिय थे, कभी कभी तो सप्ताह में पैंतिस-पैंतिस ऐसे प्रोग्राम प्रसारित होते थे, अब तो शायद एक भी न होता हो. तुम लड़कों को शायद इसकी याद न हो, परन्तु वे प्रोग्राम बड़े भड़कीले होते थे.

''इन प्रोग्रामों में अधिकतर में कोई न कोई चीखता था, चीख का स्वर प्रभाव बड़ा ही उत्तेजक होता है. तुम सोचते होगे कि जरूरत पड़ने पर हर अभिनय करता चीख सकता है, किसी हद तक यह ठीक भी है, परन्तु वास्तविक तथा उत्तेजक चीख के लिये निर्देशक एक विषेशज्ञ को ही बुलाते थे. हां 'चन्दू घंटा' जैसे किसी व्यक्ति को, और मेरा ख्याल है उस समय चीखने वाले वह अकेले ही व्यक्ति उन दिनों उपलब्ध थे. ''मैंने भी उन्हें अपनी एक दो फिल्मों में काम दिया था.''

''वे बहुत ही बढ़िया काम करते थे, वे बच्चे, बड़े, औरत, मर्द यहां तक कि बहुत से जानवरों के समान भी बखूबी चीख लेते थे. तथा उन्हें अपनी तरह-तरह की चीखने की कला पर गर्व था. फिर टेलीविजन के आजाने से रेडियो पर ड्रामों का महत्व बहुत घट गया और अब चीखने वाले को लगभग कोई पूछता ही नहीं. कुछ वर्ष पहले मैंने भी 'चन्दू धंटे' का एक दो फिल्मों में प्रयोग किया था परन्तु फिर वह अचानक गायब ही हो गया, क्या तुमने कहा तुम उसकी खोज कर रहे हो? ''मैंने भी कई वर्ष से उसके विषय में कुछ नहीं सुना?''

''हमें यह मालूम नहीं था परन्तु लगता है हम उनकी ही खोज कर रहे हैं। हम तो एक असली चिल्लाने वाली घड़ी की खोज में लगे थे, ''राजू ने उत्तर दिया. उस ने बैग से घड़ी निकाल कर प्रदर्शित की, राणादे को इसमें काफ़ी दिलचस्पी होती प्रतीत हुई!

'एक अनोखे कार्य का नमूना है' वे बोले, 'मुझे विश्वास है, यह काम 'चंदू घंटे' का ही है. यह घड़ी उन्होंने ही बनवाई होगी. उनके सिवाये जिसका नाम ही

बन्द करो बकवास

देखा एक ख्वाब तो यह सिलसिले हुये

बन्द करो बकवास और यह बताओ खुदाई का यह सिलसिला कब तक चलवाओगी? सारा पिछवाड़ा खोद लिया और तुम्हें ख्वाब में जो गढ़ा धन दिखाई दिया था अब तक तो हाथ लगा नहीं।

चिल्लाने वाला घंटा है, ऐसी चिल्लाने वाली घड़ी कौन बनवाएगा! उन्हें ही यह एक मज़ाक सा लगेगा."'

राजू ने राणादे को चिल्लाने वाली घड़ियों के कमरे के विषय में बताया जो उन्होंने हरी के घर में देखा था. राजू ने मि. हरीश तथा हरी के पिता की गिरफ्तारी का भी जिकर किया. सब कुछ सुन कर मि. राणादे कुछ सोच में पड़ गये.

'कुछ अजीब बात है' वह बोले, "ये मि. हरीश चंदू घंटे के जैसे ही लगते हैं.चंदू एक छोटा सा व्यक्ति था, और तुम्हारा कहना मि. हरीश छोटे तथा मोटे से थे. मेरे आखिरी बार देखने के बाद हो सकता है वह कुछ मोटा हो गया हो. साथ ही मैं ने यह भी सुना था कि रेडियो प्रोग्राम कम होने के समय उसे कहीं से बहुत सा धन प्राप्त हुआ था." मैं आसानी से उसके द्वारा अपनी भिन्न भिन्न चीखों की आवाज से भरी घड़ियां बनवाने की कल्पना कर सकता हूं. इससे उन्हें अपने पिछले जीवन की याद आती होगी. साथ-साथ मित्रों का मनोरंजन भी होगा, परन्तु मुझे यह समझ नहीं आ रहा, उसने अपना नाम क्यों बदला होगा?"

"क्या उन्हें कला का शौक था"? श्याम ने पूछा "मुझे तो इसका खास पता नहीं परन्तु कभी अभिनेता कलाकृतियां एकत्रित करते हैं, यहां के अभिनेताओं के पास आश्चर्यजनक कीमत की कलात्मक कृतियां हैं परन्तु चदूं घंटे की इसमें दिलचस्पी के विषय में मैंने कभी नहीं सुना!"

'धन्यवाद श्रीमान!" राजू खड़ा हो कर बोला और साथ ही दूसरे लड़के भी उठ खड़े हुए! आपने हमें कुछ बातें बताई हैं जिनके विषय में हमें सोच विचार करना पड़ेगा। श्रीचंदू घंटा और मि. हरीश दोनों एक ही व्यक्ति हैं कुछ गड़बड़ा देने वाली बात है। और हरी के पिता की गिरफ्तारी का इस सब से क्या संबंध है कुछ समझ में नहीं आ रहा. यदि हमें और कुछ पता चला. तो आपको सूचित करेंगे।"

इसके साथ नमस्कार कर तीनों लड़के प्रतीक्षा करती कार में बैठ माथुर कबाड़ी के घर पहुंच गये। ड्राइवर ने उन्हें उतार दिया और चला गया, लड़के सोच में डूबे सामान से भरे कबाड़ी घर के लोहे के दरवाजे के भीतर घुसे ही थे कि लकड़ियों के ढेर के पीछे से एक व्यक्ति अचानक इनके सामने आ खड़ा हुआ.

"लड़कों! याद है न मैं कौन हूं?" वह बोला. यह व्यक्ति मि. जीटर था जिसे एक घंटा पहले लड़के हरी के घर में मिले थे।

"तुम्हारे उस बैग में एक घड़ी है, वह मेरी है," वह गुर्राया!

"तुम ऐसा नहीं कर सकते", महिन्दर चिल्लाया और उछल कर वह मि. जीटर की टांगों में लिपट गया. श्याम और राजू तुरन्त महिन्दर की सहायता को बढ़े राजू ने आदमी की बांहें पकड़ी, साथ ही श्याम ने उसके हाथ से बैग छीनने का प्रयास किया।

परन्तु मि. जीटर अत्यन्त बलवान थे उन्होंने श्याम और राजू को चिड़ियों के समान एक ओर को धकेल दिया और फिर अपने मजबूत हाथ से महिन्दर की कमीज को पकड़ कर उसे एक ओर मिट्टी में फेंक दिया।

"मरम्मत करवाना चाहते हो तो फिर कोशिश करना" वह बोला.

उसी क्षण कबाड़ी घर के लम्बे चौड़े ताकतवर सहायक हंस ने उसके कंधे पर अपना भारी भरकम हाथ रक्खा। "मेरे ख्याल से यदि तुम राजू को उसका बैग लौटा दो तो अच्छा रहेगा श्रीमान!"

"ओह तुम बड़े बद्माश हो, छोड़ दो मुझे!." मि. जीटर दहाड़ा. और उसने हंस के जबाड़े का निशाना ले कर एक घूंसा मारा. परन्तु हंस के बैठ जाने से उसे न लग पाया. दोनों में लड़ाई शुरू हो गई और इसी दौरान जीटर के हाथ से बैग छूट कर गिर गया जिसे नीचे झुक कर महिन्दर ने उठा लिया. और काफी दूर सुरक्षित स्थान पर जा खड़ा हुआ। दोनों एक दूसरे को पटकने और मारने में लगे हुए थे। अन्त में हंस ने जीटर को उठा कर गुस्से से हवा में उछाल कर पकड़ा और राजू सेपूछा बोलो इसका क्या करना है? मैं इसे पकड़े रखूं जब तक तुम फोन कर पुलिस बुला लो! "नहीं राजू ने जल्दी से विचार कर उत्तर दिया, उसके ख्याल से एक पुरानी टूटी-फूटी घड़ी की चोरी को पुलिस कोई विशेष महत्व न देगी, और यदि पुलिस ने उसे महत्व दिया भी तो, वे तुरन्त गवाही के तौर पर घड़ी को ले लेंगे। परन्तु इस समय राजू घड़ी के राज का पता लगाने को सबसे अधिक उत्सुक था.

मि. जीटर को नीचे रख दो और जाने दो, हमें घड़ी तो वापिस मिल ही गई है.

"अच्छा ठीक है," और हंस ने बड़े बेमन से जीटर को धरती पर पटक दिया.

(क्रमशः)

मदहोश
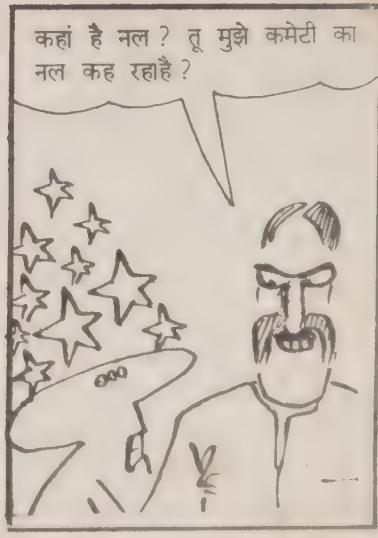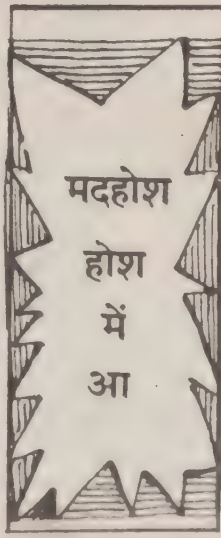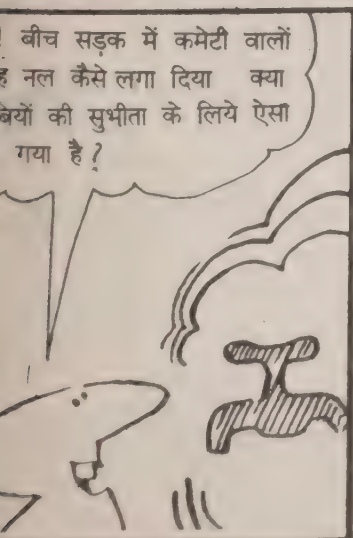
साढ़े बीस सूत्री हास्य कार्यक्रम
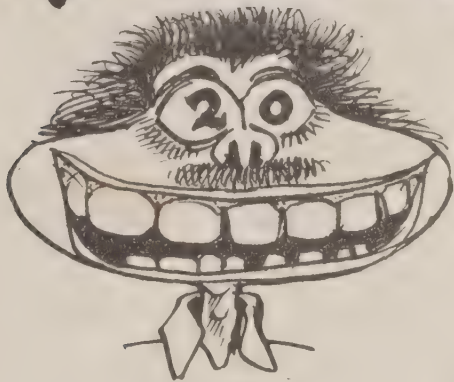
प्रधान मंत्री ने देश की बिगड़ती हालत सुधारने के लिये बीस सूत्री कार्यक्रम बनाया है। देश की हालत का लोगों के मूड पर भी बहुत सीधा प्रभाव पड़ता है। महंगाई, बढ़ती आबादी तथा बिगड़ती कानून व्यवस्था जैसे लोगों के होठों से हंसी छीन रही है। चेहरों पर चिन्ता तथा तनाव की लकीरें गहरी खाइयां बना रही हैं। हमारे लिये लोगों को हंसाना व उनका मनोरंजन करना कठिनतर होता जा रहा है। समस्यायें जनता के चारों ओर प्याज की परतों की तरह दीवार दर दीवार बनाती जा रही हैं जिन्हें बींधना व्यंग्य वाणों के लिये पहले जैसा आसान नहीं रहा। हास्य क्षेत्र की इस बिगड़ती हालत से जूझने के लिये हमने भी प्रधान मंत्री की नकल कर साढ़े बीस सूत्री हास्य कार्यक्रम बनाया है। सूत्र तो वास्तव में बीस ही हैं आधा सूत्र पासंग के नाम पर है जो आप जोड़ सकते हैं और हमने यह वर्ष हास्य उत्पादकता वर्ष के रूप में मनाने का निश्चय किया है। आप सब से साढ़े बीस सूत्री कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग देने का निवेदन है।

कच्चे धागे
सिलाई के कच्चे धागों के उत्पादन को बढ़ावा दिया जाये। पेन्टकी सिलाई फटने पर आसपास कितने कहकहे बिखरते हैं यह तो बताने की जरूरत नहीं है।

संसद में हास्य को प्रतिनिधित्व
सर्कस के जोकरों को बारी-२ संसद का मनोनीत सदस्य बनाया जाये। फिल्मी दुनिया में कामेडियनों को भी यह अवसर दिया जा सकता है।
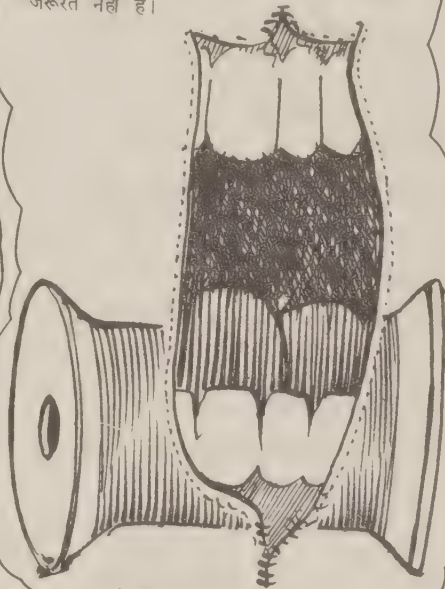
हास्य कन्सेशन
हास्य कवियों को कवि सम्मेलनों में जाने के लिये रेलवे उसी तरह भाड़े में छूट दे जैसे तीन वर्ष तक के बच्चों को मिलता है।
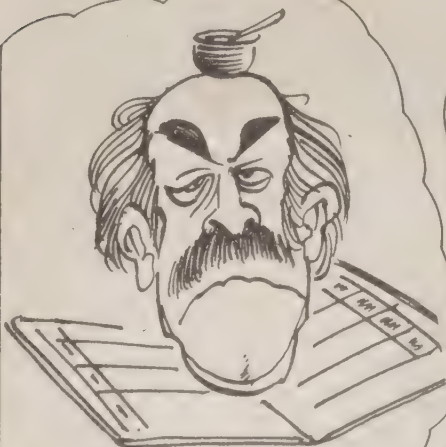
मनहूस को मार
जो लोग गमगीन चेहरा बनाये रहते हैं। जोक्स सुनाने पर भी नहीं हंसते उनके राशन कार्ड में राशन की मात्रा घटा दी जाये।

कृषि क्षेत्र में उत्पादन वृद्धि
घास या फसल काटने वालों को विशेष अनुदान व मजदूरी वृद्धि

कृषि क्षेत्र को हमने इसलिये चुना क्योंकि दराती जो घास या फसल काटने के काम आती है उसका फल मुस्कराहट जैसा होता है।
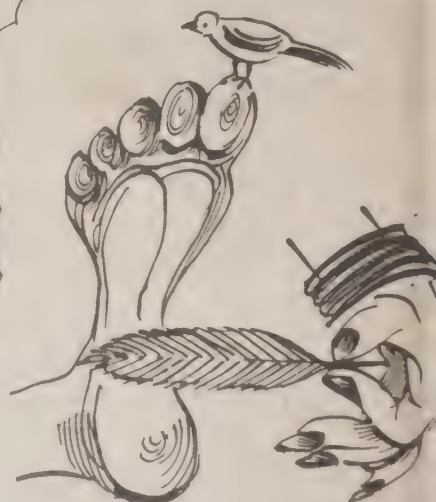
पक्षियों की रक्षा
पक्षियों की रक्षा के विशेष प्रबन्ध हों। पंछियों से हमें पर मिलते हैं जो गुदगुदाने के काम आते हैं।

चुटकुलों का आयात

हमारे देश में चुटकुले कम ही जन्म लेते हैं। विदेशी पत्रिकाओं में छपे चुटकुलों को नकल मार कर छापने में प्रोत्साहन दिया जाये।

प्रतिदिन एक मजाक

समाचार पत्र आवश्यक रूप से रोज राजनारायण का वक्तव्य छापें। लोगों को मुफ्त में रोज एक मजाक सुबह-२ मिलेगा।

बंधुआ मजदूरों की मुक्ति

बीवियों के लिये वर्ष में एक महीने के लिये मायके जाना अनिवार्य हो ताकि उनके बंधुआ मजदूर पति वर्ष में एक महीने तो मुक्ति की सांस लें।
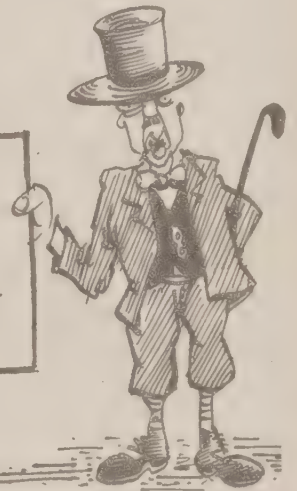
जब सिनेमा हालों में चार्ली-चैपलिन या लॉरेल हार्डी की फिल्में चल रही हों तो ३० प्रतिशत सीटें हरिजनों गिरिजनों के लिये रियायती दर पर रिजर्व हों।

पेड़ लगाये जायें

वन उगाये जायें, पेड़ लगाये जायें। पेड़ों से लकड़ी मिलती है जिससे बेलन बनता है और हमारे देश की हास्य कविताओं का आधार ही बेलन होता है।

दालों के अधिक उत्पादन को प्रात्साहन

दालों का उत्पादन बढ़ाया जाये, भारतीय खाने में दाल ही तरीदार सूप का रोल अदा करती है। सब्जियाँ तो प्रायः घरों में सूखी ही बनती हैं। दाल न हो तो गला सूख जाये और हंसने में कठिनाई पेश आयेगी।

हड़तालों पर रोक

प्रायः देखा गया है कि हड़तालों या प्रदर्शनों में लोग इतने नारे लगाते हैं कि उनका गला बैठ जाता है, बाद में वे हसने के लिये मुंह खोलते है तो आवाज ही [illegible] [illegible]कलती।

केलों के उत्पादन को प्रोत्साहन
केले के छिल्कों पर से फिसलने वाला कितने लोगों को हंसाता है आप जानते ही होंगे। केले का उत्पादन बढ़ना चाहिए।
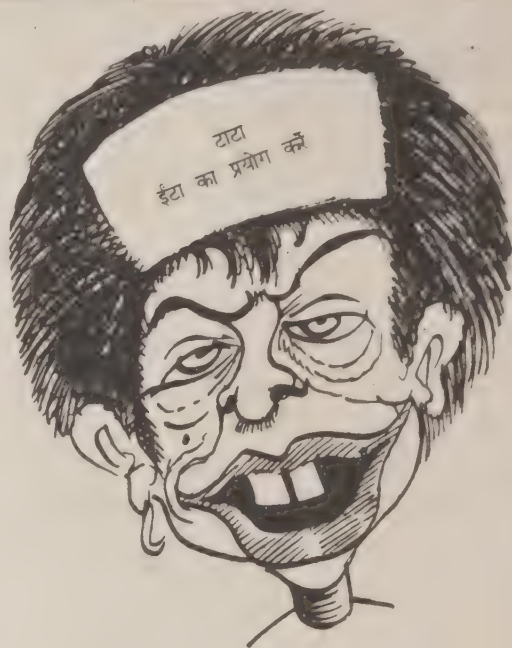
करों में छूट
जो कम्पनियां हास्य पत्रिकाओं में विज्ञापन देती हैं उन्हें उत्पादन शुल्क में छूट मिले। पत्रिकायें विज्ञापनों के सिर पर ही तो जीती हैं।

परिवार नियोजन पर विशेष बल
क्योंकि हंसते या मुस्कराते समय प्रायः मुंह भी लाल तिकोन की सी शक्ल बनाता है। जब मुंह फाड़ा जाता है तो जीभ नजर आती है जिसका रंग भी लाल ही होता है।

घी-तेल उत्पादन में वृद्धि
घी-तेल अधिक खाने से चर्बी बढ़ जाती है। मोटापा आ जाता है और यह तो आप भी मानेंगे कि मोटे आदमी हंसमुख मज़ाकिया स्वभाव के होते हैं।
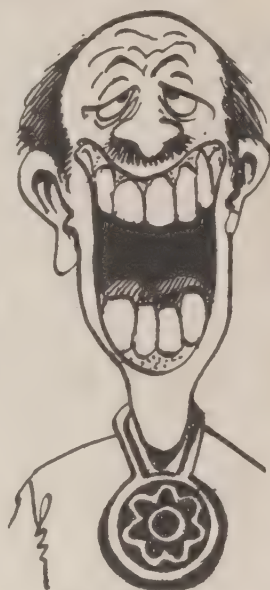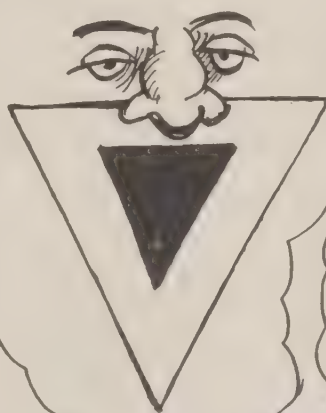
हास्य वीर
वर्ष में सबसे अधिक जोरदार ठहाका मारने वालों को हास्य वीर का पदक दिया जाये, जो पद्म श्री या महावीर चक्र के समान माना जाये।

उत्पादकता वर्ष
१९८२ उत्पादकता वर्ष के रूप में मनाया जाये। चार्टों में वृद्धि की रेखा ऊपर जाती है और गिरावट की रेखा नीचे। मुस्कराने में भी होठों के कोनों की रेखा ऊपर जाती है और नीचे की ओर गिरते कोने गम का भाव प्रदर्शित करते हैं।
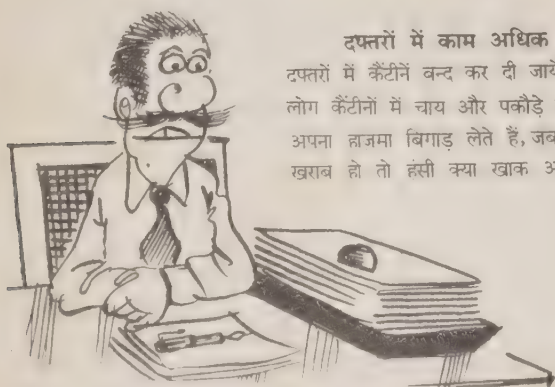
दफ्तरों में काम अधिक हो
दफ्तरों में कैंटीनें बन्द कर दी जायें वरना बाबू लोग कैंटीनों में चाय और पकौड़े खा-खा कर अपना हाजमा बिगाड़ लेते हैं, जब हाजमा ही खराब हो तो हंसी क्या खाक आयेगी?
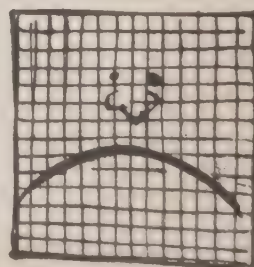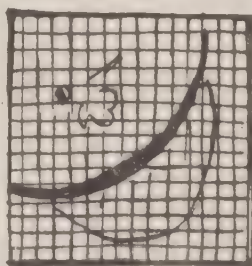
क्यों और कैसे

प्र. : संसार में पाठशालाओं का आरम्भ कब और क्यों हुआ ?

उ. : आदिकाल से ही मनुष्य जब गुफाओं में ही रहता था, उसने अपने बच्चों को अपने ज्ञान की शिक्षा देनी आरम्भ कर दी थी। यदि मनुष्य ने बच्चों को कुछ सिखलाया न होता तो संसार में उनमें से एक का भी जीवित बचना संभव न था, क्योंकि बालक को इसका ज्ञान न होता कौन सा पशु हिंसक है, या कौन सी बनस्पति को खाया जा सकता है अथवा गर्म रहने के लिये आग कैसे जलाई जाती है।

कई शताब्दियों बाद ही मनुष्य लिखने की कला सीखने में सफल हुआ, लिखने से वह अपने ज्ञान को संजोकर रख अपने बेटे पोतों तक पहुंचा सकता था! लिखने की प्रणाली के आरम्भ होते ही पाठशालाओं का आरम्भ भी हुआ। सबसे पुराने जिन पाठशालाओं के विषय में जानकारी है वे मेसोपोटेमिया और मिस्र में ३००,०००, या ४ ००,००० पूर्व आरम्भ हुए थे।

इस प्रकार पाठशालाओं में अपने ज्ञान की शिक्षा दे कर बच्चों को संसार में रहने योग्य बनाया जाता था परन्तु प्राचीन काल में अधिकतर स्थानों में समाज ऐसे ढंग का था कि वहां लोगों की धारणा थी कि उच्च शिक्षा हर नवयुवक के लिये आवश्यक नहीं है उदाहरण के तौर पर मिस्र में पादरी, सरकारी अफसर, वास्तुकार या डाक्टर बनने वाले नवयुवकों के लिए ऊंचे स्तर की शिक्षा की व्यवस्था थी। यह ऊंची शिक्षा थोड़े ही युवक ग्रहण कर पाते थे। भारत वर्ष में भी शिक्षा प्राचीन काल से ही दी जाती रही है। राजा, महाराजाओं के पुत्र शिक्षा ग्रहण करने के लिये ऋषि मुनियों के आश्रम में रहते थे१

प्राचीन हिब्रू जाति में भी शिक्षा की प्रथा अत्यन्त पुरानी समझी जाती है। जब यह जाति स्वतंत्र थी तो पिता घर में ही अपने बच्चों को, अपनी जाति के इतिहास, कानून तथा धर्म की शिक्षा देते थे। बाद में बाहरी आक्रमणकर्त्ताओं के पराधीन होने पर, यहां के लोगों को लगा कि उनकी जाति के रीति रिवाज और परंपरायें भुला दी जायेंगी। इनकी रक्षा करने के लिये ही उन्होंने विधिवत पाठशालाऐं चलाई। इन पाठशालाओं में धनी तथा निर्धन सभी को सामान्यरूप से, भाषा, धर्म और यहूदियों के इतिहास की शिक्षा दी जाती थी।

सम्भवतः मनुष्यजाति के इतिहास में यहीं सबसे पहले गरीब और अमीर को सामान्यरूप से विधिवत शिक्षा दी गई थी।

मुस्कानें

क्यों और कैसे ?
दीवाना पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

आपस की बातें

चचा बातूनी की कलम दवात से

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

मधुकर निलकंठराव चुटे, धुलियाः शादी के बाद लड़कियां अपने पति पर दबाव क्यों डालती हैं?

उ. यह भी कोई प्रश्न हुआ कि नींबूनिचोड़ नींबू पर दबाव क्यों डालता है?

हीरो मंगल पंसारी, अजमेरः गुरु और चेले में क्या अंतर है?

उ.: बहुत बड़ा अंतर है, पर चेला, "गुरू मार चेला" हो तो कोई अंतर नहीं.

नरेन्द्र निन्दी, कपूरथलाः अच्छे भले आदमी के चेहरे पर बारह कब बज जाते हैं?

उ.: जब किसी बेवफ़ा की याद में जागना पड़ता है, और हालत इस शेर जैसी हो जाती है:

हम इन्तेज़ारे याद में जागे तमाम रात,
अच्छे भले थे इश्क ने उल्लू बना दिया

अर्जुन सींग नाथानी, म. नं. ३/३/३४ चैक पावर हाउस, औरंगाबादः चाचा जी, मेरी फोटो दीवाना अंक न. ३ में ४० वें स्थान पर छपी है. मगर आप ने मेरा पूरा पता नहीं छापा. क्या आप मेरी फ़ोटो दोबारा छापने का कष्ट करेंगे?

उ.: दोबारा छापना तो मुश्किल . पहले ही हजारों फोटो उचक-उचक कर शोर मचा रही हैं, "हमें एक बार तो छापो." पूरा पता आपका हमने इस प्रश्न के साथ दे ही दिया है.

राधेश्याम पाहवा, राजेन्द्र नगर : ग़म और खुशी, दोनों ही हालतों में आंसू क्यों आते हैं?

उ.: पता नहीं, यह सब ऊपर वाले की मेहरबानी है. हम तो आप को एक शेर सुना सकते हैं इस ग़म की खुशी में:

ग़म हद से बढ़े तो दिल वाले खुशियों की बरातें लाते हैं,
जब हद से गुज़र जाती है खुशी तो ग़म के आंसू आते हैं.

ताजवर, बेरमो : अंकल जी, लोग कहते हैं, कुत्ता इन्सान से ज़्यादा वफ़ादार होता है. क्या यह सत्य है?

उ.: सब पेट भरे के चोंचले हैं भाई जान. पेट खाली हो तो कुत्ता भी काटने को दौड़ता है, और पेट भरा हो तो बड़ी शराफ़त से दुम हिलाता है.

अशोक जौहर "गगन", देहरादून : आज कल कोई भी बड़ा नेता जब बिफरता है तो अपने दल का नाम कांग्रेस (—) अपने नाम पर क्यों रख लेता है?

उ. : क्योंकि आज हर छोटा बड़ा नेता अपनी डेढ़ ईंट की अलग मस्जिद बनाने के चक्कर में है बल्कि यों कहिये कि आज कल वर्कर बनना कोई पसंद नहीं करता, सब नेता बनना चाहते हैं. अब हालत यह होने वाली है, कि कांग्रेस (अर्स) और कांग्रेस (जगजीवन राम) की तरह आप को और कितनी ही कांग्रेसें नज़र आयेंगी, जैसे : कांग्रेस (लल्लू पनवाड़ी) कांग्रेस (गंगू तेली), कांग्रेस, (बुद्धू खटीक) कांग्रेस, (लुडिंदामल नाई).

विजय मोहन शर्मा, केकड़ी : चाचा जी, जब भगवान अकल बांट रहा था तब आप कहां थे?

उ. : हम यह पता लगा रहे थे कि भगवान ने आप के अकल के कटोरे में क्या डाला है. अब हम उस पर हाथ साफ कर गये हैं और आप को पता भी नहीं चला है.

अमरजित सिंह रंगीला, कुमार धुबी बाजार : औरत मां भी है, बहन भी है, बेटी भी है, बीवी भी है, तो फिर औरत को नागिन क्यों कहा गया है?

उ. : पता नहीं लगता है आप हमारी श्रीमती जी से मिल चुके हैं.

एस.एम. आलमगीर, हज़ारीबागः डीयर अंकल, दो आदमी एक दूसरे की तारीफ कब करते हैं?

उ. : जब दोनों की हालत एक दूसरे के लिये, अमरीका और पाकिस्तान जैसी होती है.

अभिमन्यु मिश्रा, कुलाबा : चाचा जी, संसार में सब से बड़ी चीज़ क्या है? मेरे ख्याल में इज्जत. और आप के ख्याल में?

उ. : पैसे की इज्जत और इज्जत का पैसा.

कर्ण बी. ससाने, आष्टी मराठवाडा : अमीर और अमीरी की ओर बढ़े हैं और गरीब और गरीबी की ओर. ऐसे क्यों?

उ. : आगे बढ़ने का ज़माना है. ऐसा इस लिये.

गोपेन्द्र कुमार, कारब, मथुरा : अगर मनुष्य को किसी कार्य में सफलता न मिले, तो उसे क्या करना चाहिये?

उ. : जो कुछ हुआ है, उस के तजुर्बे से लाभ उठाना चाहिये. एक बार दो आदमियों ने मिल कर काम करने की योजना बनाई. एक ने कहा आज हालत यह है कि मेरे पास तजुर्बा है और तुम्हारे पास पैसा है. कल मेरे पास पैसा होगा और तुम्हारे पास तजुर्बा. अगर आप को भी कोई ऐसा ही तजुर्बा हुआ है गोपेन्द्र कुमार जी, तो अपना तजुर्बा लेकर ऐसे आदमी को ढूंढ़िए, जिसके पास पैसा हो. फिर मिल कर काम करने पर पैसा आप के पास होगा और वह तजुर्बे को शहद लगा कर चाट रहा होगा.

धर्मवीर अरोड़ा, रेवाड़ी : जब चाची रूठ जाती है तो आप उसे कैसे मनाते हैं? ज़रा बतायें, ताकि मैं भी अपनी पत्नी को इसी प्रकार मना सकूं.

उ. : यही राज की बात तो हम आप से पूछना चाहते हैं धर्मवीर जी. अपनी हालत तो यह है:

मेरा सर उन के कदमों पर, वो दामन को बचाते हैं,
कोई बतलाये क्या ऐसे ही रूठों को मनाते हैं?

सुरेन्द्र खुराना, "काका", नीपतः चाचा जी, दुनियां में मां से बड़ा रिश्ता और कौन सा होता है?

उ.: जो हमारे और आपके बीच है प्यारे भतीजे.

अशोक जौहर सांवरिया, देहरादूनः आगे कुआं हो और पीछे खाई हो, तो नाकाम प्रेमी को क्या करना चाहिए?

उ.: दोनों के बीच में बैठ कर यह गाना गाना चाहियेः

खूने दिल पीने को और लख़्ते जिगर खाने को,
यह ग़िज़ा मिलती है लैला तेरे दीवाने को.
तू ने खाई है कलेजी अभी और सीरनी कबाब,
मुर्ग़ भेजा है मुसल्लम अभी तलवाने को
खाई में कूद पड़ूं या कुऐं में डूब मरूं
बस यही बात बची है तेरे फ़रमाने को.
ठंड लग जायेगी यह सोच के रुक जाता हूं
दिल तो करता है बहुत डूब के मर जाने को.
हम तो डूबे हैं तेरी आंख की गहराई में,
फिर भला कहते हो क्यों खाई में गिर जाने को,
हाये, क्या मर गये सारे मेरे मिलने वाले,
कोई तो आये, मना ले मुझे घर जाने को.

लंगड़ा

आपस की बातें
दीवाना पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२.

खेल खेल में

श्रीलंका का शुभ प्रवेश

१७ फरवरी १९८२ को श्रीलंका विश्व का आठवाँ क्रिकेट-टैस्ट खेलने वाला देश बना जब वह अपना पहला टैस्ट मैच जो विश्व टैस्ट क्रिकेट का १२१ वाँ टैस्ट था इंगलैड के विरुद्ध कोलम्बो सारावाणामट्ट स्टेडियम में खेला। यह ५३वाँ टैस्ट मैदान तथा ४५ वां टैस्ट केन्द्र था।

श्रीलंका के प्रवेश से पहले के टैस्टों का ब्यौरा

देश	टैस्ट खेले	जीते	हारे	ड्रॉ	बराबर	टॉस जीते
इंगलैंड	५७८	२१४	१४६	२१८	—	२८७
आस्ट्रेलिया	४२२	१८४	१२०	११७	१	२१२
द० अफ्रीका	१७२	३८	७७	५७	—	८८
वेस्टइंडीज	२११	६७	५९	८४	१	११२
न्यूजी लैंड	१४५	१२	६६	६७	—	६७
भारत	१९५	३५	७१	८९	—	९८
पाकिस्तान	११७	२१	३२	६४	—	६४

टैस्ट क्रिकेट का श्रीगेणेश १५ मार्च १८७७ को मेलबोर्न में इंगलैंड तथा आस्ट्रेलिया के मध्य टैस्ट मैच से आरम्भ हुआ। इन दो टैस्ट जन्मदाता देशों के मध्य ३० टैस्ट खेले गये और १२ मार्च १८८९ को, दक्षिण अफ्रीका टैस्ट खेलने वाला तीसरा देश बना। टैस्ट मैच पोर्ट एलिजाबेथ में खेला गया।

इन तीनों के मध्य १७२ टैस्टों के खेले जाने के पश्चात २३ जून १९२८ को लार्डस में वेस्ट इंडीज ने चौथा देश टैस्ट खेलने वाले सदस्य के रूप में प्रवेश किया।

१८५ टैस्ट मैचों के बाद न्यूजीलैंड को पांचवां टैस्ट राष्ट्र बनने का सौभाग्य क्राइस्टचर्च में १० जनवरी १९३० को मिला

२१८ टैस्ट मैचों के समापन पर भारत छठे टैस्ट खेलने वाले देश के रूप में लार्डस में २५ जून १९३२ को उभरा।

३५४ टैस्टों के खेले जाने पर देहली में पाकिस्तान १६ अक्तूबर १९५२ को सातवां सदस्य बना।

अब के टैस्टों में २८५ इंगलैंड में, २१६ आस्ट्रेलिया में, ९८ दक्षिणी अफ्रीका में, ९० वेस्ट इंडीज में, ७० न्यूजीलैंड में, ११२ भारत में, ४९ पाकिस्तान में व १ श्रीलंका में खेला गया।

श्रीलंका के प्रथम टैस्ट का स्कोर

श्रीलंका : प्रथम पारी-२१८, द्वितीय पाळी-१७५

इंगलैंड : प्रथम पारी-२२३, द्वितीय पारी-१७१

(इंगलैंड सात विकेटों से यह मैच जीता)

कप्तान श्रीलंका— बी. वार्नपुरा

इंगलैंड—कीथ फ्लैचर
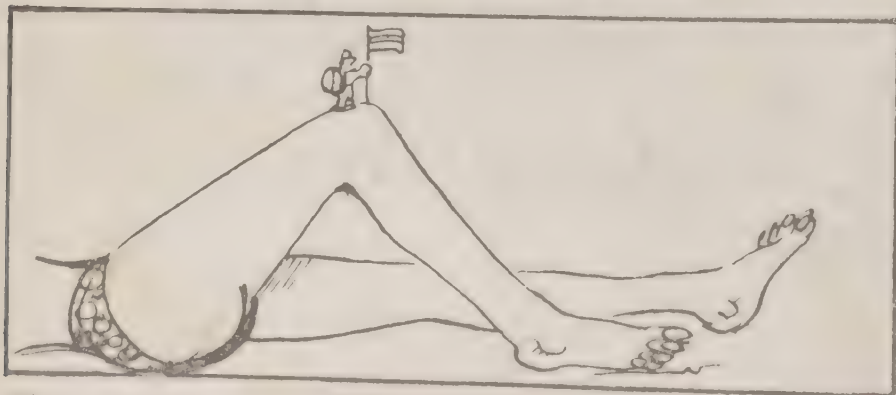
देवता पर १३५ टन बालों का चढ़ावा—

आन्ध्र प्रदेश का भगवान वैन्कटेशवर का मन्दिर ही संसार में एक ऐसा मन्दिर है जहाँ हर उमर तथा हर लिंग के तीर्थ यात्री महीनों तक बाल बढ़ा कर अन्त में मन्दिर में चढ़ाते हैं।

केवल इस ही वर्ष में लगभग तीस लाख तीर्थयात्रियों ने अपने बाल मन्दिर में चढ़ाये। इन बालों का वज़न १३५ टन था तथा इन्हें ३५ लाख रुपये में बेचा गया।

लगभग ५७५ नाई इस मन्दिर के प्रबन्धकों द्वारा इस कार्य को करने के लिये लगाये गये, जिन्होंने पच्चीस-पच्चीस लोगों के बाल काट कर खूब कमाई की।

●

कंगारु की छलाँग को पशुराज्य की सबसे अधिक ऊर्जा कुशल संचालन प्रणाली कहा जा सकता है, आस्ट्रेलिया के प्रोफैसर टैरीन्स डॉसुन के अनुसार कंगारु छलाँग लगाते समय अपनी मांसपेशियों के विशेष लचीलेपन और रेशों से ऊर्जा रखने का काम लेता है। पहली छलाँग के बाद हर छलाँग में कम शक्ति का उपयोग होता है क्योंकि पशु ज़मीन पर पैर रखने से माँसपेशियों के खिंचने पर निर्भर रहता है। ये भी पता लगा है कि एक बार कंगारु पाँच किलोमीटर प्रति घंटे की गति पर पहुँच जाता है तो उसके द्वारा प्रयुक्त आक्सीजन की मात्रा भागने की गति बढ़ने पर भी उतनी ही रहती है।

●

उत्तरी चुम्बकीय ध्रुव जो पानी के जहाज़ों तथा बियाबान जंगलात में खोये हुए व्यक्तियों को राह खोजने का स्थिर आधार माना जाता है अब किसी प्रकार स्थिर नहीं माना जा सकता। उत्तरी चुम्बकीय ध्रुव केनाडा के उत्तर पश्चिमीय क्षेत्र में है जो वास्तविक उत्तरी ध्रुव से लगभग ६२५ मील पर है तथा यह उत्तर—उत्तर पश्चिमीय दिशा में लगभग १६ मील हर वर्ष खिसक जाता है.

●

इतिहास में मनुष्य द्वारा निर्मित सबसे तेज चलने वाला यान है अन्तरिक्ष में खोज करने वाला 'हेलिओस-बी'। यह सन् १९७६ में सूर्य के २७,०००,००० मील निकट तक पहुँच गया था। इतनी दूरी पर भी गुरुत्वाकर्षण ने खोजक को १५३,००० मील प्रति घंटे की गति से घुमाया और फिर दुबारा अन्तरिक्ष में फेंका था (१५३,००० मील प्रति घंटे की गति पृथ्वी के ऊपरी वायुमण्डल में ध्वनि की गति से २३२ बार अधिक तेज़ है)।

●

हंसना मना है
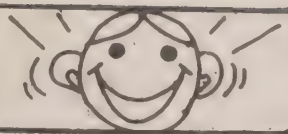
एक आदमी को जब अपने वकील से दो बिल मिले तो उसने गुस्से से वकील को फोन किया और कहा—"मैं तो केवल आपके दफ्तर एक ही बार आया हूं, आपने दो मुलाकातों का बिल क्यों भेजा है?"
"क्या आपको याद नहीं?" वकील ने उत्तर दिया" पहली बार आप बाहर जाने के बाद दुबारा अंदर आये थे, ये पूछने के लिये, क्या मैंने आपका छाता देखा था।"

●

'तुम्हारी सफलता का क्या राज़ है? एक नवयुवक ने एक सफल बैंकर से पूछा।
'धैर्य, मेरे बेटे" बुजुर्ग ने उत्तर दिया" धीरज से संसार का हर काम सफलता पूर्वक किया जा सकता है"।
'मैं शर्त लगा सकता हूं, एक काम अधिकतम धीरज से भी नहीं हो सकता" नवयुवक ने उत्तर दिया.
'वह क्या काम है"?
'छलनी में पानी ले जाना," नवयुवक बोला।
'यह भी किया जा सकता है," उत्तर में बुजुर्ग बोला.
'यदि ले जाने वाला पानी के जम जाने तक धीरज रख सके"।

●

एक मरीज का आप्रेशन होना था, बड़ा नर्वस था। एक दूसरे रोगी ने कहा, 'घबराने की बात नहीं, सर्जन राजाराम कुशल हैं, विलायत पलट हैं थोड़े भलक्कड़ हैं पिछले साल एक लड़के के पेट में कैंची भूल गये थे. आप्रेशन ठीक हो गया, तीसरे दिन रोगी चाय पी रहा था, बहुत खुशी से बातें कर रहा था तभी राजा राम आये और बोले," "क्या किसी ने मेरी बरसाती देखी है, तीन दिन से मिल नहीं रही

बॉस—'क्या तुम्हें शार्टहैन्ड आती है?"
सेक्रेटरी—'जी हां श्रीमान्, परन्तु उसमें मुझे अधिक समय लगता है"।

"आया जुड़वाँ बहनों को नहला रही थी। कुछ समय बाद उन दोनों को हंसते सुन कर आया ने पूछा "और तुम दोनों हँस क्यों रही हो?"
"ओह! यूं ही," रानी ने उत्तर दिया "सिर्फ तुमने बानी को दो बार नहला दिया और मुझे एक बार भी नहीं नहलाया."

●

जज—'तुम अपने मुकदमे की तारीख बढ़वाना चाहते हो क्योंकि तुम्हारा बचाव का वकील बीमार है। परन्तु तुमने तो चोरी के इलजाम का इकरार कर लिया है फिर वकील क्या कहेगा."
अपराधी—'सरकार, वही तो मैं भी सुनना चाहता हूं"।

●

एक बार एक महिला शहर से बाहर जाती हुई एक सड़क पर कार चलाती हुई जा रही थी, तो उन्होंने कुछ बिजली ठीक करने वालों को जल्दी-जल्दी बिजली के खंभों पर चढ़ते देखा तो साथ बैठी महिला से वह बोलीं, "हरे राम,' जेन, ऐसा लगता है यह लोग समझते हैं मैंने पहले कभी कार नहीं चलाई है।"
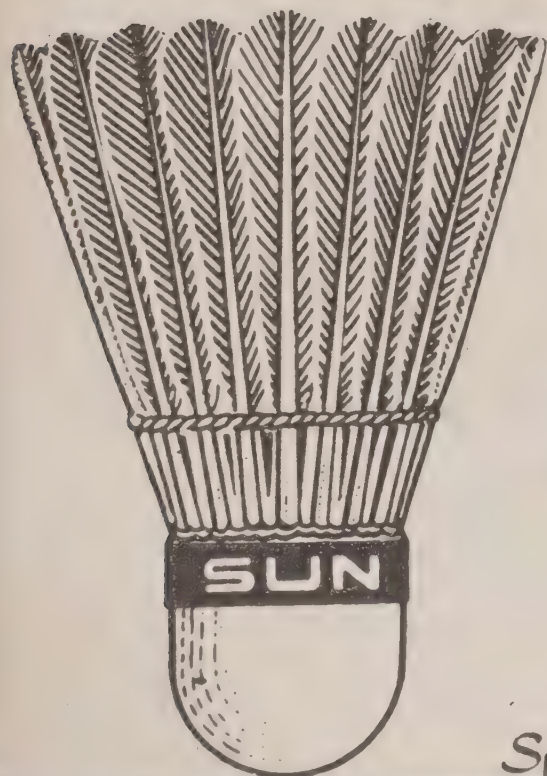
सिलबिल पिलपिल

सिर मुंडाते ही ओले पड़े!

इस बार गांव से बड़ी बुरी खबर आई है पिछले दिनों जो ओले पड़े उसमें हमारी फसल तबाह हो गई। आस-पास के औरों के खेतों में तो थोड़ा बहुत बच भी गया हमारी फसल तो

ओलों ने काट कर चारे की ढेरियां बना दीं। अब इस वर्ष गाम से फसल का हमें कोई पैसा नहीं आयेगा।

एक भी पैसा नहीं आयेगा? फिर यहां हमारा गुजारा कैसे चलेगा?

और इस साल के बम्पर फसल के पैसों की उम्मीद पर थमने पिछली फसल का सारा पैसा पहले ही उड़ा दिया है।

ओ ऊपर वाले, तुझे यह काम इसी साल और हमारे साथ ही करना था? तू तो अंतर्यामी है तुझे तो पता था कि हमारे एकाउंट में केवल दो-तीन सौ रुपये बच रहे हैं। तेरे ऑडिटर ने भी तुझे हमारा हाल बता दिया होगा फिर हम पर तुझे जरा भी दया नहीं आई? क्या यही इन्साफ है तेरा?

ऊपर वाले थम भी याद रखना! इन दोनों का गुस्सा भी बहुत खराब है, तुम्हारे सिंहासन को यह हिला कर रख देंगे। जब उधार देने वाले डंडे मार-मार कर इन दोनों की खाल भी भुस्स भर कर राष्ट्रीय संग्रहालय में रखवा देंगे तो यह आकर बैकुन्ठ लोक के दरवाजे पर भूख हड़ताल करने बैठ जायेंगे। बाद में इनको संतरे का जूस पिलाना पड़ेगा।

हमने तो क्या-क्या सोचा था कि इस साल के पैसों से घर में कूलर लगवायेंगे। मई, जून के महीने में दस-पंद्रह दिन के लिये नैनीताल जायेंगे और वहां से जयश्री टी के लिये लंहगा लेकर आयेंगे। अब वह प्रोग्राम कैंसिल करना पड़ेगा।

अरे भई थम नैनीताल और कूलर की चिन्ता में पड़े हो, पहले यह तो सोचो छः महीने क्या खाओगे?

पांच-छः महीने के लिये नौकरी ही कर लेते लेकिन दिल्ली में नौकरी मिलती कहां है। गर्मियों का मौसम आ रहा है। ठंडे पानी की रेहड़ी ही लगा कर कहीं बैठ जायेंगे। कहते हैं पानी की रेहड़ी वाले गर्मियों में तीस-चालीस रुपये दिन का आराम से कमा लेते हैं।

रेहड़ी लगा कर हम अपना रेपुटेशन थोड़े ही खराब करेंगे। भूल गया हम जासूस हैं? क्या हुआ हम पांच-छः महीने से अपने जासूसी दफ्तर गये ही नहीं तो?

लो मैं तो यह भूल ही गया था कि बड़े-२ गुंडे बदमाश हमारे नाम से किस प्रकार थराते हैं।

थमारा आफिस तो बहुत खस्ता हालत में है. ऐसा लगता है बादशाह अकबर की कोठी के एनेक्सी का कोई सर्वेन्ट क्वार्टर हो। बाहर की दीवारों का फलस्तर उखड़ रहा है अन्दर जाने क्या हाल होगा?

हमें कभी-२ अपने जासूसी दफ्तर आते रहना चाहिये था। सफाई और रख-रखाव ही होता रहता।

AI जासूस
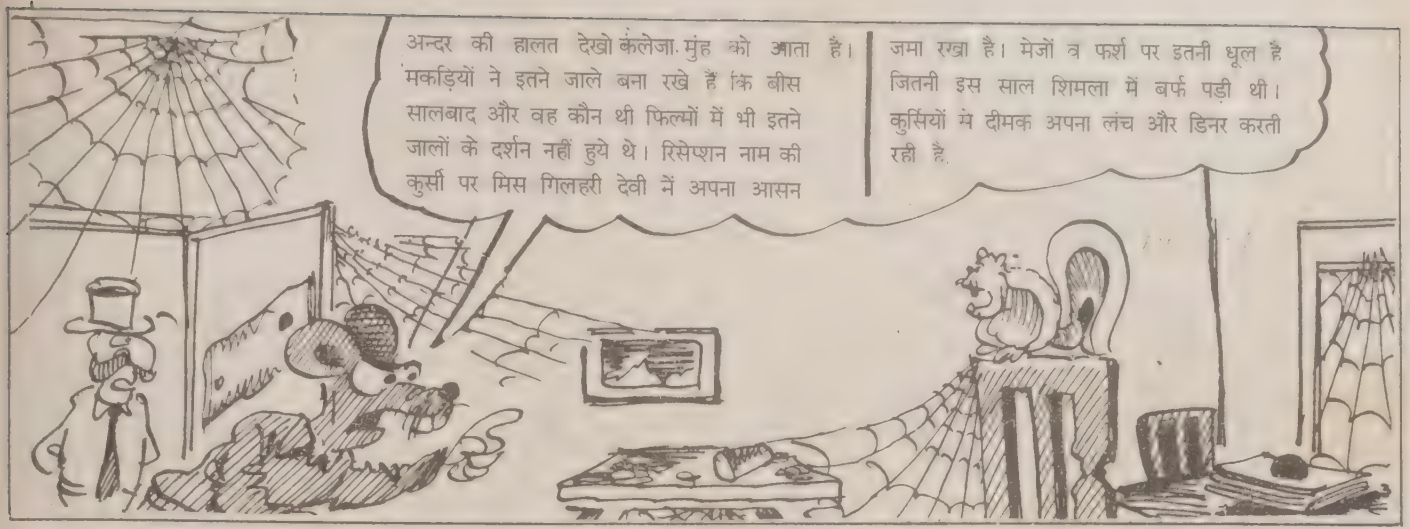
अन्दर की हालत देखो कलेजा मुंह को आता है। मकड़ियों ने इतने जाले बना रखे हैं कि बीस सालबाद और वह कौन थी फिल्मों में भी इतने जालों के दर्शन नहीं हुये थे। रिसेप्शन नाम की कुर्सी पर मिस गिलहरी देवी ने अपना आसन जमा रखा है। मेजों व फर्श पर इतनी धूल है जितनी इस साल शिमला में बर्फ पड़ी थी। कुर्सियों में दीमक अपना लंच और डिनर करती रही है.

मेरी मेज की दराज में से चूहा निकल रहा है। चूहों ने हमारी जिंदगी पर तो कब्जा कर लिया है। घर में तो गरीबचन्द ने अड्डा जमा ही रखा था। अब अपने दफ्तर में भी उसके दोस्त कब्जा जमा कर बैठ गये हैं।
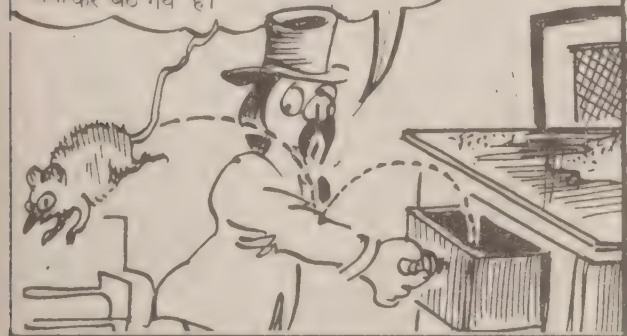
ऐं! मैं यह क्या देख रहा हूं, मेरी अढ़ाईहज़ार रुपये की एक्जीक्यूटिव चेयर पर कुत्ता आराम से लेटा सो रहा है। टेबल पर जहां मेरा पाइप धरा रहता था वहां एक हड्डी है। इस कुत्ते की इतनी हिम्मत कैसे हुई ? यह अन्दर आया कहां से होगा ?
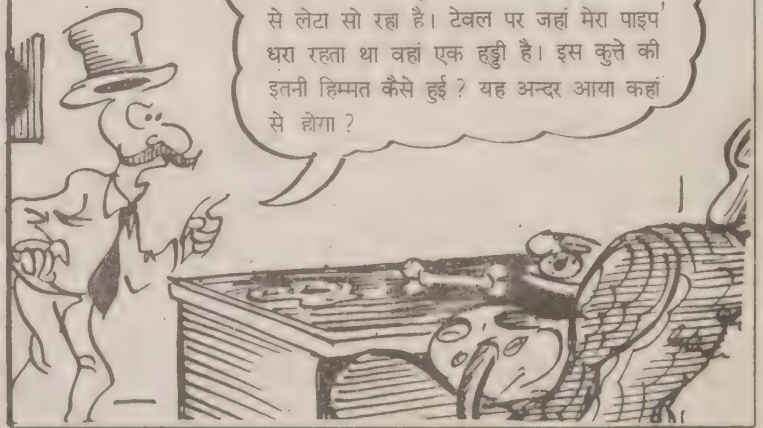
→

कुत्ते के बच्चे, मैं मार-मारकर तेरी हड्डी पसली एक कर दूंगा। तू मेरी कुर्सी पर आकर बैठा है। कब से इसे तूने अपने बाप का समझ रखा है? गिलहरियों और मकड़ों को तो हम छोड़ देंगे लेकिन तुझे नहीं छोड़ेंगे

यह अन्दर तो आया होगा खिड़की के रास्ते ही, दरवाजा तो बन्द था, लेकिन खिड़की टूटी कैसे होगी? कुत्ता या गिलहरी तो तोड नहीं सकते। अगर चोर अन्दर घुस आया होगा तो यह फर्नीचर वगैरह गायब होना चाहिये था। सब तो यहीं पड़ा है।
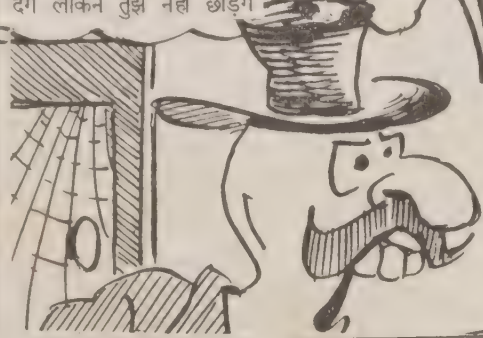
खिड़की कैसे टूटी होगी इस राज का तुम्हें अभी पता लग जायेगा। पहले तुम दोनों अपने हाथ ऊपर कर लो। मुझ से चालाकी करने की कोशिश की तो मेरा चाकू तुम्हारे गले को ककड़ी की तरह काट लेगा। आदमी का खून करना मेरे लिये एक खेल है।

आप बिल्ला व रंगा के मामा होंगे।

मैं जैसा-जैसा कहता जाऊं वैसे-वैसे करते रहो। तुम्हारे दफ्तर में मैं पुलिस के डर से छुपा रहा था। चारों तरफ पुलिस मेरी तलाश में है। मैंने पांच दिनों से कुछ नहीं खाया है पहले मेरे लिये तुम दो में से एक खाना लायेगा ठहरो पहले मेरी कहानी सुन लो।

मेरा नाम रामफल है। मैंने आठ खून किये हैं। दो केसों में मुझे उम्र कैद की सजा हुई है और बाकी छः अदालतों में चल रहे हैं। पंदह दिन पहले सलाखें तोड़ कर जेल से भाग गया! यहां तुम्हारे दफ्तर के दरवाजे खिड़कियों पर पड़े जालों ने बता दिया कि दफ्तर बन्द पड़ा है। मैं खाने-पीने का कुछ सामान चुरा कर खिड़की खोल अन्दर आया, तब से यहीं छुपा हूं। तुम्हें मेरी मदद करनी पड़ेगी वरना मैं कह दूंगा कि तुम दोनों ने ही मुझे यहां छुपाया था। मैं तो मारा ही जाऊंगा तुम दोनों को भी बर्बाद करके रख दूंगा। अब मैं जैसा-जैसा कहूं वैसे करते जाना . . .

हमारे पास चारा ही नहीं है।

भाई जी इब क्या होगा? उसने पहले मुर्ग मुस्सलम मंगवा कर खाया फिर हमारे पास जेबों में जितने पैसे थे वह ले लिये और आखिर में हमारे ही बैग में हमारे ही सारे कपड़े भर कर और एक जोड़ा पहन कर चला गया। कपड़े उसने इसलिये लिये होंगे उससे उसे भेष बदलने में आसानी रहेगी। और हमें इस हाल में नंगा दफ्तर में छोड़ दिया।

उसके बाद की बात बता रहे हो? वह तो रस्सियों से तुम्हारी मुश्कें भी बांध गया था। यह तो शुक्र मानो कि उसे गरीबचंद चूहे का पता नहीं था जिसने रस्सियां कुतर कर कम से कम तुम्हें आजाद तो कर दिया

यह तो अच्छी बोहनी हुई अब हम घर कैसे जायेंगे

मैं बताता हूं अब हम क्या करेंगे, मैं बंसुरी बजाता हूं तुम दोनों गोपियों का अभिनय करो कपड़े तो तुम्हारे उतर ही चुके हैं समझ लो कि कृष्ण जी उठा कर ले गये हैं। रासलीला की प्रक्टिस करेंगे। अगर हमारी मंडली की रास लीला अच्छी जमी तो मथुरा जाकर रास लीला करेंगे और रोटी पानी के पैसे ही बना लेंगे।

चूहे यह मजाक का समय नहीं है। हम इस तरह नंगे बाहर निकल कर घर तो जा नहीं सकते। अगर तूने पांच मिनट के अन्दर कोई उपाय न खोजा तो मैं सिल पर तुम्हारी पूंछ रख उस पर बट्टा मार दूंगा।

धीरज रखो! अहा! एक बहुत बढ़िया आइडिया आया है। बस यही एक तरकीब है जिससे तुम घर जा सकते हो।
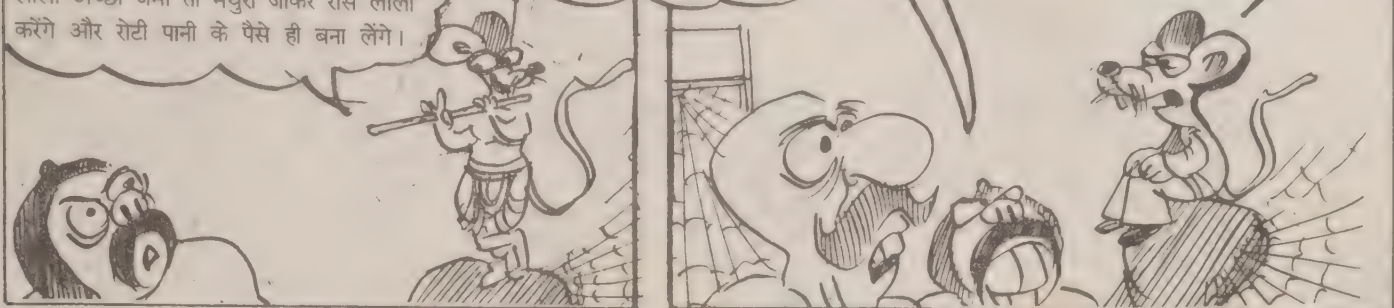
आओ भाइयों, आप भी कच्छा जलूस में शामल हो जाओ। केवल कच्छों में जलूस में शामिल हों ताकि सरकार की आंखें खुल जायें।

कच्छा जलूस
कपड़ों की बढ़ती कीमतों के विरोध में

कपड़ों पर से टैक्स हटाओ

आजकल कपड़ों की कीमत इतनी बढ़ गयी है, कपड़े बनवाना पूंजीपति अमीरों के बस का रोग ही बन गया है। हम कच्छा जलूसों द्वारा देश में कपड़ों की बढ़ती कीमत के विरुद्ध एक क्रांति की लहर लाकर खड़ी कर देंगे।

सिलबिल पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये।

१५ अप्रैल १९८२ को

आ रहा है

व्यंग चित्रों और हास्य लेखों से भरपूर. धूम मचाता, हंसता-गाता, तूफ़ान भरा.

दीवाना हास्य विशेषांक

मूल्य केवल २.०० रुपये

- बढ़े हुये आठ रंगीन पृष्ठ
- हर हास्य में नई दीवानगी
- हर पृष्ठ अनोखा
- हर दीवानगी में नई अक्लमंदी

और यह सभी स्थाई स्तम्भ : मोटू-पतलू, सिलबिल-पिलपिल, सवाल यह है, बुरे फंसे, नामी चोर, लल्ला की लव स्टोरी, फैण्टम के कारनामे, लल्लू, मदहोश, बन्द करो बकवास, गरीबचन्द की डाक, आपस की बातें, क्यों और कैसे, खेल-खेल में, फिल्म जगत, वर्ग पहेली, और कितने ही नये और पुराने फीचर. दीवाना हास्य विशेषांक में प्रस्तुत बारह मसाले की चाट का चटखारा आप बरसों नहीं भूलेंगे.

अपने पत्रविक्रेता से कह कर अपनी प्रति आज ही सुरक्षित करा लीजिये. खुद दीवाना पढ़ कर दीवानगी बढ़ाइये और औरों को दीवाना पढ़ने की सलाह दीजिये.

नोट : एजेंटों से अनुरोध है कि वे अपनी बढ़ी हुई कापियों का आर्डर तुरंत भेजें.

फैण्टम -जंगल शहर

डियाना तुम्हें हमारा वृक्षघर पसन्द आया।

घर अति सुन्दर है, अनोखा सा ही है, इसमें मैं जाऊंगी कैसे ? रस्से पर चढ़ कर ?

नहीं! सभी आधुनिक सुविधाएं है।

सचमुच का ऊपर ले जाने वाला, है न। अम्दुत बात !

हां ! बहुत ही अम्दुत है।

FALK & BARRY 6/16

डियाना अति सुन्दर है न

अति सुन्दर हैं। हवा में लटका महल ! यह वहां पहुंचा कैसे ?

हमारे मित्रों ने इसे बनाया है, रस्से वाले लोग अद्वितीय मकान बनाने वाले।

वे लोग यह देखने की प्रतीक्षा में हैं तुम्हें घर कैसा पसन्द आता है।

प्रतीक्षा कर रहे हैं? वे, हैं कहां ?

?

FALK & BARRY 6/17

रस्सेवाले लोगों ने यह 'मकान बनाया था ?

हाँ। उनसे बेहतर कोई भी नहीं है, वे वृक्षों में ही रहते हैं, इस प्रतीक्षा में हैं कि तुम्हें घर कैसा पसन्द आता है

FALK & BARRY 6/18

?

चलो हम ऊपर चल कर देखें।

अरे . . . यह तो सुरक्षित है।

बनाने वालों की गारंटी है।

वह पत्थर कैसा है ?

यह हमारे भार का प्रतिभार! है, जैसे-जैसे यह पत्थर नीचे जायेगा हम ऊपर जायेंगे। फराका भी हमारे साथ आ रहा है

पृथ्वी से तो यह छोटा दिखाई दे रहा था. मुझे पता नहीं चला था कि यह इतना बड़ा होगा।

डियाना को घर की सूरत कुछ पसन्द सी नहीं आई लगती है, यह बहुत ज़रूरी है कि उसे घर अच्छा लगे ?

वृक्षघर का ऊपर ले जाने वाला लिफ्ट

?

मामा . . . डाडा।

?

वृक्ष घर के भीतर

यह हमारे घर का होल है डियाना

?

और यह रहने का कमरा है।

!!

हमारा लिविंग रूम और वह हमारा खाने का कमरा, अभी इसमें सामान नहीं लगा है . . . तुम्हारी प्रतीक्षा में।

वृक्षघर के भीतर डियाना एक दम स्तब्ध सी हो गई।

!!

यह तुम्हारा रसोईघर है और रस्सेवाले लोग इसे बहुत पसन्द करते हैं, उनकी ऐसा ही रसोईघर अपने घरों में बनाने की इच्छा है।

आशा है डियाना घर पसन्द करेगी, अंकल वाकर को उनके घर पसन्द न आने से बहुत दुःख होगा

!!!

(क्रमशः)

वर्ग पहेली

इनाम १० रू

1		2	3	4	5
	■	6			
7	8		■		■
9		■	10		11
12				■	
13		■	14		

अन्तिम तिथि:- २४-४-८२

संकेत

बायें से दायें

१. नित रीना के न तोड़ दोबारा जोड़ सुधार गृह बनायें। (२-४)

६. आगे पीछे से खूब उजला हो और बीच में अधिक नहीं तो आग पैदा कर सकता है यह। (४)

७. इसे भेजना दूसरों के मुंह संदेश देना है। (३)

९. कुमारी जो मीठे की पूरी डली नहीं है। (२)

१०. अच्छी औरत गहने बना सकती है ? (३)

१२. फूट कर रोते समय किस शासक की दुहाई दी जाती है? (

१३. पीछे अधुरा मान। (२)

१४. थाली में मसाला डोसा पड़ा हो तो इससे एक और व्यंजन मिल सकता है। (३)

ऊपर से नीचे

१. ऐसा व्यक्ति जल्द ही रुठ सकता है-खफा हो सकता है। (३-३)

२. यह ऊपर वाला नहीं है। (३)

३. आपके कमरे मे मौजूद मीठी वस्तु ? (२)

४. एक अभिनेत्री की इच्छा। (४)

५. इस पर चढ़ी हो तो समझो लाड़ प्यार ने बिगाड़ रखा है। (२)

८. शायर की दिली ख्वाहिश— (४)

१०. संगीत की तान जैसी राक्षसी। (३)

११. अरब डमरुमध्य मे पाया जाने वाला लचकीला पदार्थ। (३)

व्यंग्य लघुकथा

बाराती

शिव रैना

तलवार-जैसी लंबी बाहें, मीनार-जैसे क़द और मैदे-सिंदूर-जैसे शबनमी रंग में, विलायती राम पूरा अतालवी शाहज़ादा लगता था। खाते-पीते घर का चश्म-चिराग़ था। हर सात घण्टे बाद नया सूट-बूट बदलता। बादामी आंखों में जवां एक्टरों का-सा सम्मोहन था; चाल में राजहंस की सी चंचलता। लड़कियां तो उचक-उचक कर उसे देखती थीं। प्यार और हुस्न का विलायती राम स्वयं भी बड़ा रसिया था—लेकिन लड़की के सामने उसके देवता कूच कर जाते। चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगतीं। बोलती बंद हो जाती।

विलायतीराम अफसर बनना चहता था। अफसरी के सारे विटॉमिन उसमें मौजूद थे; लेकिन लाख कोशिशों के बावजूद, 'अपर डिवीज़न' क्लर्क से आगे न बढ़ पाया था। घर से ही हज़ारों रुपये लेकर, स्टैण्डर्ड बढ़ाता था। दोस्तों को कहताः ''हम-जैसे लोग तो पैदायशी अफसर होते हैं। हमारे रहन-सहन और चाल-ढाल से कोई हमें अफसर से कम नहीं समझता! आदमी की असली लोकप्रियता उसकी शादी और शव-यात्रा से झलकती है। देख लेना, शहर का हर जीव मौजूद होगा.''

विलायती राम ठीक ही कहता था। वह पूरा अंग्रेज़ नज़र आता। अजनबी भी उसे अपनी बारात की शोभा बढ़ाने के लिए, फ़ख्र से बुलाते थे। लोग प्रायः उसके साथ चलते झिझकते थे। क्योंकि वह साथ चलने वाले को ग्रहण लगा देता था। वह लोग विलायती राम को अफसर समझते और साथ चलने वाले को उसका नौकर! फिर भी, विलायती-राम की लोकप्रियता उसकी पर्सेनैलिटी की तरह, दिन-बदिन बढ़ती ही रही। वह हज़ारों में पहिचाना जाता.

लकड़ी के लखपति व्यापारी गोवर्धन लाल की इकलौती लड़की से, विलायतीराम की शादी का ऐलान हुआ तो लोग हज़ारों की संख्या में बधाइयां देने आए।

लेकिन, बारात वाले दिन विलायती-राम को गहरा सदमा लगा—और फिर मौसम का पहला, दिलका दौरा पड़ा। हुआ यह, कि शहर के दो प्रतिशत व्यक्तियों को छोड़कर, एक भी बाराती विलायतीराम की महकती-मदमाती बारात में शामिल न हुआ। क्योंकि हर न्योता-प्राप्त आदमी ने अपने कपड़ों, चाल-ढाल और व्यक्तित्व को, विलायतीराम की शान-शौक़त के योग्य ही नहीं समझा था!

दीवाना-कैमल रंग भरो प्रतियोगिता नं. २३ का परिणाम

प्रथम पुरस्कार—प्रिति प्रभात, ५९-बी, गुरुगोविन्दसिंह मार्ग, लाल कुआ, लखनऊ।

द्वितीय पुरस्कार—जीनत, एफ ६ ए, रमेश मार्ग, ''सी'' स्कीम, जयपुर।

तृतीय पुरस्कार—शंकर कुमार राय, एम. के. स्टुडियो, पो. लक्ष्मण झूला, पौढ़ी गढ़वाल

दीवाना आश्वासन पुरस्कार

१. पूनम गर्ग—गाजियाबाद, २. शिवरतन थरानी—आगरा, ३. रश्मी वार्ष्णेय—नैनीताल, ४. जगजीतकौर—मेरठ कैण्ट, ५. जया कुमारी—नई दिल्ली।

कैमल आश्वासन पुरस्कार

१. सैय्यद मोहम्मद अरशद—वाराणसी, २. कु. सुनीता श्रीवास्तव—अलीगढ़, ३. हरजिन्दर सिंह—बम्बई, ४. काईद जोहर मनासी—रतलाम, ५. गुप्रीत थापर—पटियाला।

सर्टीफिकेट

१. गिरधारी लाल—भवानी मंडी (राज.), २. मनोज कुमार पोद्दार—रायपुर, ३. संजीव अग्रवाल—बुलन्दशहर, ४. ए. प्रकाश—फरीदाबाद, ५. राजीव गुलाटी—गांधीनगर, दिल्ली, ६. आलोक कपूर—जोधपुर, ७. मनीष ऋषि—जनकपुरी, नई दिल्ली, ८. अजय आर. बेडिया—बंबई, ९. मनज्योत मॉन—नई दिल्ली, १०. महबूब बुरहानुद्दीन मालदार—बंबई।

अंक ४ में प्रकाशित चित्र वर्ग पहेली का सही हल

परनारीगमन	कमनीयता
रसायनिक	जनमानस

सही हल—जमकर

निर्णय लाटरी द्वारा

विजेता—प्रमात खन्ना

द्वारा—पी.सी. खन्ना, नाटो गली

अमरोहा गेट, मुरादाबाद-२४४००१.

दीवाना अंक नं. ५ में प्रकाशित चित्र वर्ग पहेली का सही हल

कतरन, सकपकाना वार्डन, मेहनतकश, चरमराहट

सही हल—राशन कार्ड

विजेता—(निर्णय लाटरी द्वारा) सुरेन्द्र कुमार पूनम वैरायटी स्टोर पत्थर वालान, खैर नगर, कानून गोयान, मेरठ शहर।

लघु विज्ञापन

Self Protection from theives & Beasts with strong metal Folding 6 Round Automatic Pistol emitting Daziling fire with loud and thunderous sound

No Licence required

INDIA'S FIRST RUSSIAN MODEL
TIGER ZORRO
777
6 Round
Automatic Pistol

Costs Rs. 75/- only. Original leather case & 300 Bullets free Postage Rs. 10/- Extra. Extra Bullets Rs. 5/- per hundred.

EXPORT AGENCY (SD)
Mahavirganj Aligarh

कद बढ़ाएँ

IMPROVE HEIGHT upto 35 without EXCERCISE

Consult personally or send self-addressed stamped envelope for details to :

DR. BAGGA
LAL KUAN, (Opp. Kucha Pandit)
DELHI-110006. PHONE : 262426

1000(Golden Stripped)Gummed
ADDRESS LABELS

With imported technology in India. Your name and address beautifully printed on 1000 finest quality Golden stripped gumed labels Packed in attractive Carton. Free : 800 year calender. Price Rs. 25 by VPP (Post extra) GIKAY ARTS EMPORIUM, 150-Gupta Colony, Delhi-9

क्रिकेट सितारों व क्रिकेट प्रेमियों की मनपसंद पत्रिका

क्रिकेट स्टार

हर माह चार लाख से ज्यादा पाठक इसका इंतजार करते हैं क्योंकि—
इसमें होती है क्रिकेट की सम्पूर्ण जानकारी, खिलाड़ियों के ताजे रंगीन चित्र, सतरंगा क्ल:अप और ढेरों अन्य आकर्षण

एक प्रति : 4 रुपए/वार्षिक : 40 रु.

क्रिकेट स्टार, 1258, कला महल, दरियागंज, नई दिल्ली-110002.

नमूने की प्रति के लिए दो रु. के डाक टिकट भेजें

दीवाना

के वार्षिक सदस्य बनिये और १० रुपये बचाइये

चन्दे की दरें

वार्षिक	अर्द्धवार्षिक	एक प्रति
२७ रुपये	१४ रुपये	१ रुपये ५० पैसे

साधारण रुप से दीवाना की सदस्यता शुल्क ३६ रु. एवं डाक खर्च अलग से होती है। लेकिन आप अभी सदस्य बनिये और १० रुपये बचाइये एवं अपनी कापी अपने घर या दफ्तर में प्राप्त कीजिये।

नीचे दिये कूपन को भरिये और चन्दे की रकम के साथ हमें डाक द्वारा भेजिये। चन्दे की रकम केवल दीवाना के नाम से ही भेजें।

अपना सदस्यता शुल्क शीघ्र भेजिये

सरकुलेशन मैनेजर, दीवाना, ८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

कृपया मुझे दीवाना के वार्षिक/अर्द्ध वार्षिक ग्राहकों की सूची में सम्मिलित कर लीजिये। मैं चन्दे की रकम———— रुपये भारतीय पोस्टल आर्डर/डिमांड ड्राफ्ट/मनीआर्डर नं.————————से भेज रहा हूं।

नाम————————————————

पता————————————————

————————शहर/जिला————————

राज्य ————————पिन कोड————————

DELUXE
MINI PRINTING PRESS

BEST for Home Printing

A COLOURFUL DEVISE TO PRINT & PREPARE IN ENGLISH
* RUBBER STAMPS
* VISITING CARDS
* LETTER HEADS

PRINTING OUTFIT

A Set of Variety of Rubber Types with Accessories For V. P. Parcel
PRICE Including Postage **Rs-30/-**

YOUNG INDIA TRADING CORPN
161/1 MAHATMA GANDHI ROAD,
CALCUTTA-700 007.

WEMBLEY

"GREY-TOUCH"® Hair Colouring Stick

LOOK YEARS YOUNGER

Ask for free literature
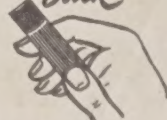
A BOON FOR THOSE WHO CAN'T WITHSTAND HAIR DYES

WEMBLEY LABORATORIES
SINGH SABHA RD., DELHI-7

राजू परियानी, ३८ कारजू कालौनी (इन्दौर), १७ वर्ष, कराटे सीखना।

राजकुमार, १२ लाजपत कुंज, नेपियर टाउन, जबलपुर-म.प्र., १७ वर्ष, फिल्में दखेना।

अश्विनी गुप्त, c/o आर० आर० बुलेटिन, वैस्टर्न कचहरी रोड़, मेरठ-१, १७ वर्ष टिकट संग्रह

तुलसी मस्कीन, म.नं. ८४३/११, पानीपत, २० वर्ष, फरमाईश भेजना।

दिनेश पुरी, मकान नं. ५७६१. कुन्दन पुरी, सिविल लाइंस, लुधियाना, १८ वर्ष, पत्र मित्रता।

धर्मेंद्र कालड़ा, गुरु अरजब पुरा मुहल्ला, ःई आबादी, फगवाड़ा (पंजाब), १७ वर्ष, पत्र मित्रता,

एस. परवेज हैदर ए. १८/२०, भारद्वाजी टोला, वाराणसी-१, १८ वर्ष, दीवाना पढ़ना

अजय कुमार मल्होत्रा म.नं. N.K. ३१२ मु. चरणजीत पुरा, जालन्धर शहर(पंजाब- १४४००१)

राज कैमरीबाल द्वारा रमेश स्टील इन्डस्ट्रीज, सुभाष रोड, रायपुर- म.प्र., १७ वर्ष, पत्र-मित्रता,

चंद्रशेखर त्रिपाठी, "गोविंद भवन" कामथवार्ड कैरेली- नरसिंहपुर-जि.न. पुर, १७ वर्ष

सुनील कुमार, साथी बुक स्टाल, केनरा बैंक के नजदीक, खन्दक रोड, बिहार शरीफ (नालन्दा)

चन्द्रमोहन आहुजा म.नं. ६०४, गोपाल नगर, जालन्धर, १९ वर्ष, दोस्ती करना।

नील कमल खुराना पंजाबी बाजार के पास, जींद (हरियाणा), २२ वर्ष, दीवाना पढ़ना

करमजीत सिंह, मोती नगर, लुधियाना, २५ वर्ष, साइकिल रेस।

सुनील मठाडु, मोती नगर, लुधियाना, पंजाब, २० वर्ष, हॉकी खेलना।

बलवीर माठाडु, मोती नगर, लुधियाना, पंजाब, १९ वर्ष, "दीवाना पढ़ना।

इंटर कालेज काशीपुर (नैनीताल), १५ वर्ष, फिल्मों में काम करना तथा नाच गाने का।

सुरेन्द्र सिंह ग्रोवर द्वारा ग्रोवर बुक सैंटर, गोपाल पार्क दिल्ली. २६ वर्ष, दीवाना पढ़ना

दिनेश ढाल IE/३८ एन. आई टी फरीदाबाद, १५ वर्ष, दीवाना पढ़ना।

चरनजीत काठपाल द्वारा काठपाल भवन, रामपुरा मुहल्ला, हिसार (हरियाणा) १९ वर्ष।

उमेश वर्मा, ६७, धर्मदास स्ट्रीट नजीबाबाद-३, १७ वर्ष, तैरना।

कामेश कुमार राजपूत, "सिंहराज कुटीर" गंगासागर, जबलपुर-४८२००३, २० वर्ष,

उमेश ज्ञान चन्दानी 'प्रेमी', गोल गढ़ा, बाजार, बिलासपुर (म.प्र.) ४९५००१, २१ वर्ष

महेशचन्द्र वर्मा, टाउन एरिया मवासी, जि. रामपुर, उ.प्र., १८ वर्ष, दीवाना पढ़ना,

शरद कुमार जैन म.नं. ८, बिछिया अस्पाल के पीछे, रीवा, १८ वर्ष, पत्र-मित्रता, फिल्में

प्रद्युम सिंह द्वारा श्री राम कुमार सिंह, कुंअरदह पो. हरदियां, जि. भोजपुर (आरा) बिहार

रंजीत कुमार "सोनी", एम. जी. रोड खगड़िया, (बिहार), १८ वर्ष, कसरत, पत्र-मित्रता

आजाद प्र. "निर्बन्ध" मानसी बाजार मानसी- ८५१२१४ (बिहार) २० वर्ष, फरमाईश भेजना

दिल्लन खां, मौहल्ला नसीराबाद, पैंस्ट मिलकं, जि. रामपुर (उ.प्र.) २५ वर्ष, दीवाना पढ़ना।

नरेन्द्र गोयल, श्रीनृसिंह ओरनामेंट सेन्टर, रामपुरा बाजार, कोटा १६ स्कूटर चलाना, पढ़ने।

मधुसूदन, लक्ष्मीबाई रोड, चम्पाबाग के सामने लक्ष्मीपुरा, सागर (म. प्र.) १७ वर्ष

सनत श्रीवास्तव पो.बालोद जिला दुर्ग (म.प्र.), पिनः ४९१२२६, २१, वर्ष कैरम, दीवाना पढ़ना।

सुशील नारायण चक, ६ सरदार पटेल मार्ग, सिविलि लाइन्स, इलाहबाद, २११००१, ८ वर्ष,

बीरबल मेहर, मिट्ठमुड़ा, रायगढ़ ४९६००१, १५ वर्ष, जुडो सीखना।

अनिल कुमार मोती लाल राय, लकड़ी बाजार, पुलीस चौकी के सामने, अमरावती, पंजाब, २० वर्ष,

मो. शाहीद हुसैन, अयुबसाइकिल स्टोर्स, बाढ़ बाजार, जि. (पटना), १८, वर्ष, बैडमिन्टन खेलना।

अमोलन सिंह 'छाबड़ा' द्वारा अजंता टेन्ट हाउस, वार्ड पास रोड, चास, १८ वर्ष, पत्र-मित्रता।

राकेश कालड़ा, ३४०, पटेल नगर, हुशियारपुर १४६००१, पंजाब, २० वर्ष, फिल्में देखना,

जसविन्द्र सिंह T/८/२, एडवर्ड लाइंस, झांसी कैन्ट, १५ वर्ष, घूमना, बास्केट बाल खेलना।

विनोद बंसल, राज होस्पीटल रोड, पो. झरिया, जि. धनबाद, २० वर्ष, पत्रिकाएं पढ़ना, पत्र मित्रता।

हमारा पताः दीवाना फ्रैंडस क्लब ८-बी,
बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२.
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ————————

पता ————————

————————

आयु ———— शौक ————

दीवाना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंडस क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटाग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखन न भूलें।

तेज प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिये पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

सवाल यह है?

सब से पहले मुन्ने के पापा को ही पता लगा, कि मुन्ने के दांत निकल आये हैं.

क़ब पता लगा बेटी?
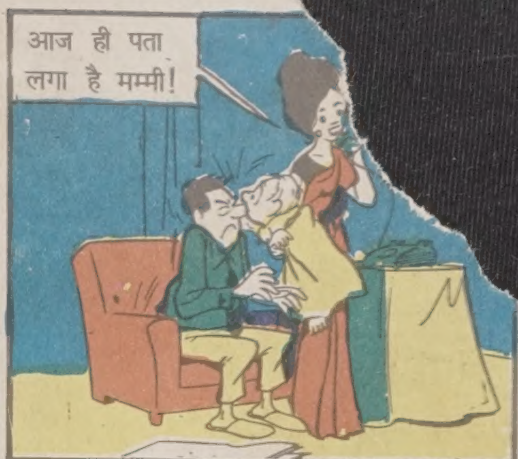
आज ही पता लगा है मम्मी!

नामी चोर

बीस साल से हम जेल के एक कोने में एक ही जगह लटके हुये हैं.
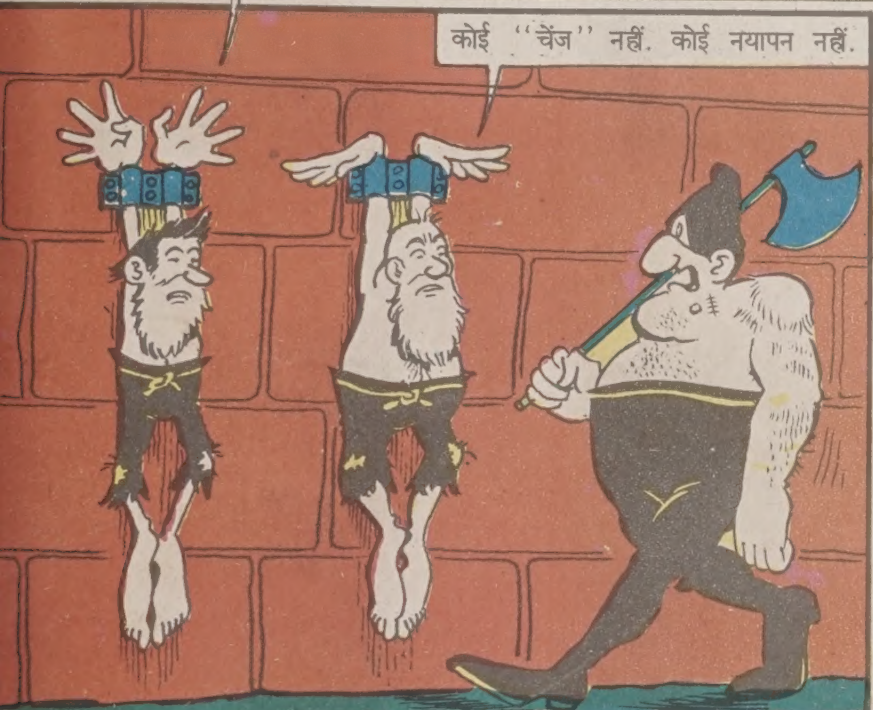
कोई ''चेंज'' नहीं. कोई नयापन नहीं.

बीस साल से एक ही दृश्य आंखों के सामने है. हम पर कुछ तो दया करो जल्लाद भाई!

मतलब है ''चेंज'' चाहिए! कोई नयापन!!
मतलब है, एक ही दृश्य से उकता गये हो!!!

लो मैंने आंखों के सामने का दृश्य बदल दिया है, अब तो खुश हो?

Regd. No. D(DN)-275